RNI No.MPHIN/2002/07269

वर्ष-16, अंक-3 अक्टूबर-दिसम्बर 2017 मूल्य-20/- रुपए

# रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

RNI No.MPHIN/2002/07269

# सतर्क रहें, सुरक्षित रहें

## मध्यप्रदेश पुलिस ने महिला सुरक्षा के लिए किए हैं ऐसे इंतजाम, जिनसे हर कदम आपको मिल सके सुरक्षा

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

**महिला डेस्क**
सभी थानों में महिलाओं की शिकायत मिलते ही त्वरित कार्रवाई

**हेल्पलाइन 1090**
राज्यस्तरीय हेल्पलाइन में महिलाएं निडर होकर करें शिकायत

**सोशल मीडिया**
महिला अपराध शाखा का फेसबुक पेज, ट्विटर हैंडल, मेरी एप में अपना लोकेशन बताने की सुविधा

**निर्भया पेट्रोलिंग**
स्कूल-कॉलेज, हॉस्टल, पार्क, मार्केट के पास महिला पुलिस की पेट्रोलिंग

**महिला थाना**
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, सतना, सागर, जबलपुर, रीवा, रतलाम और कटनी में

**सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग**
स्कूल-कॉलेज में छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण

**जनसंवाद शिविर**
जागरूकता और जानकारी देने के साथ समस्या समाधान के लिए स्कूल-कॉलेजों में शिविरों का आयोजन

**फास्ट ट्रेक कोर्ट**
महिलाओं के लिए त्वरित सुनवाई के लिए सभी 51 जिलों में फास्टट्रेक कोर्ट

**परिवार परामर्श केन्द्र**
पारिवारिक विघटन रोकने के लिए प्रदेश में परामर्श केन्द्रों की स्थापना

**MPeCop मोबाइल एप**
संकट के समय युवती के पाँच परिजनों एवं डायल 100 को पहुँच जायेगा SMS

**महिला हेल्पलाइन 1090 | MPeCop मोबाइल एप | डायल 100**

**मध्यप्रदेश पुलिस – हर कदम आपके साथ**

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-82390/17 आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2017

अक्टूबर-दिसम्बर 2017

# रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष : 16 अंक : 3 अक्टूबर-दिसम्बर 2017 मूल्य : रु.20/-


## संपादक की कलम से

# जाके पैर पड़ी बिमाई वही जाने पीर पराई

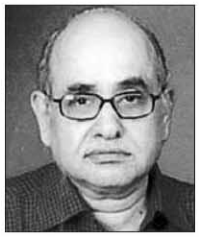

कहावत यह है कि 'जाके पैर न पड़ी बिमाई वह क्या जाने पीर पराई' लेकिन इस कहावत को यदि इस ढंग से देखा जाए कि 'जाके पैर पड़ी बिमाई वही जाने पीर पराई' यानी दुख का स्त्रोत क्या है, यह वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने कभी दुख भोगा हो। जो स्वयं दुख भोग चुके हैं केवल वे ही दूसरों का दर्द समझ सकते हैं, उसमें हिस्सा बंटा सकते हैं और उसे हल्का कर सकते हैं। श्रीमातृवाणी में श्रीमॉ ने कहा है कि हे शांतिदायक भगवान, हे परम आत्म-त्यागी, हमारे सब कष्टों के बीच हमें सहारा देने के लिए, हमारे सारे दुख और दर्द शान्त करने के लिए तूने पृथ्वी के तथा मनुष्य के सकल दुखों को बिना किसी अपवाद के जाना तथा अनुभव किया होगा। पर फिर यह कैसी बात है कि जो तेरे पुजारी होने का दावा करते हैं उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो तुझे यंत्रणा देने वाला निर्दयी समझते हैं, तुझे ऐसा कठोर न्यायाधीश मानते हैं जिसने इन सब यंत्रणाओं को स्वेच्छा से भले न रचा हो, पर जो इनका अनुमोदन तो करता ही है? मैं अब समझ रही हूं कि ये सब कष्ट जड़-पदार्थ की अपूर्णता से आते हैं जो अपनी अव्यवस्था और अपरिपक्वता के कारण तुझे अभिव्यक्त करने के अयोग्य हैं और उससे सर्वप्रथम कष्ट भी तू ही पाता है, इससे असंतुष्ट हो, अपनी तीव्र उत्कण्ठा में तू ही सबसे पहले अव्यवस्था को व्यवस्था में, दुख को सुख में, विरोध को सामंजस्य में परिवर्तित करने के लिए प्रयत्न और परिश्रम करता है। कष्ट अनिवार्य नहीं है, वांछनीय भी नहीं, परन्तु जब वह आता है तो हमारे लिए कितना उपयोगी हो सकता है! प्रत्येक बार जब दुख के बोझ से हृदय टूटता प्रतीत होता है, तब अन्तर की गहराई में एक द्वार खुलता है और अधिकाधिक समृद्ध गुप्त रत्नराशि लिए नये-नये क्षितिज प्रकट होते हैं और उनकी स्वर्णिम आभा विनाश के कगार पर खड़े जीवन को एक नवीन और अधिक प्रखर जीवन प्रदान करती हुई आती है।

श्रीमॉ कहती हैं कि जब उत्तरोत्तर अवतरणों से होता हुआ मनुष्य उस यवनिका तक पहुंचता है जिसके उठते ही साक्षात् 'तू' प्रकट होता है, तब हे प्रभु, कौन वर्णन कर सकता है 'जीवन' की उस प्रखरता का जो समस्त सत्ता के अंदर पैठ जाती है, 'ज्योति' की उस शोभा का जो उसे परिप्लावित कर देती है, 'प्रेम' की उस महिमा का जो चिरकाल के लिए उसका रुपान्तर कर देती है! भागवत प्रेम हमेशा तुम्हें थामे रहता है। तुम जो आज स्वयं को इतना टूटा हुआ और पतित अनुभव करते हो, जिसके पास कुछ भी

शेष पेज 06 पर...

श्रीराम रघुवंशी

राहुल

सीट कव्हर हाऊस

निर्माता: कार सीट कव्हर एवं कार डेकोरेशन

:: मोबाइल ::
9425302557

प्लॉट नं. 196, शॉप नं. 30, कामधेनु कॉम्पलेक्स के पीछे, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल, फोन: 0755-4285551

## राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

# मर्यादाओं, परम्पराओं और आदर्शों की पुर्नस्थापना जरूरी

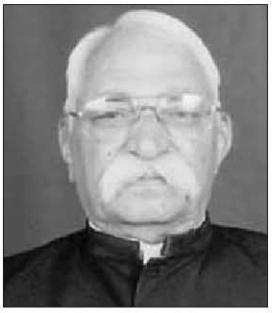

किसी भी समाज के मुख्यतया चार घटक होते हैं जिनकी समाज के गठन या संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका होती है बाल्यावस्था से किशोर अवस्था के बालक, युवा, महिलाएं और वृद्ध। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि किशोर वय के बच्चों पर समाज के भविष्य का दारोमदार रहता है और यह सबसे महत्वपूर्ण घटक है। इसका सुसंस्कारिता व शिक्षित होना, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला होना नितान्त आवश्यक है। हमारे जीवन का यह वही कालखंड होता है जिसमें मनुष्य के भविष्य की नींव बनती है, यह समाज का दर्पण होता है। कहावत है कि पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं इसलिए यह हमारा दायित्व है कि किशोर का लालन-पालन प्रारंभ से ही अच्छे व स्वस्थ वातावरण में होना चाहिए। उसकी शिक्षा-दीक्षा एवं दिशा व दशा संस्कारी एवं उच्चकोटि की हो यह समाज का दायित्व है।

बालक ही किशोर अवस्था से युवा अवस्था की दहलीज पर दस्तक देते हैं। इनमें दृढ़ता, संकल्प शक्ति, कल्पना शक्ति और समाज को सही दिशा में ले जाने का साहस तथा कर्मठता होना आवश्यक है। किसी भी समाज के भविष्य का निर्माण यही युवा करते हैं। इस अवस्था में उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति, स्वस्था शरीर तथा उच्च एवं आधुनिक शिक्षा में शिक्षित होना अतिआवश्यक है तब ही वह सशक्त समाज के निर्माण में सर्वोत्तम योगदान कर सकते हैं। अब हम चर्चा करेंगे महिला वर्ग की। यह समाज का सबसे महत्वपूर्ण घटक है और इसीलिए यह कहा गया है कि यदि एक महिला सुसंस्कृत व शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित व सुसंस्कृत हो जायेगा। हमारे समाज में महिलाओं को कन्या रुप से ही पूज्यनीय दर्जा प्राप्त है। उसका बहन का रुप स्नेह का है, माता का रुप ममता का है एवं पत्नी के रुप में वह एक अच्छी सलाहकार होती है। शास्त्रों में यह उल्लिखित है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता''। इसमें ही महिला की महत्ता निहित है। यद्यपि हमारे समाज में नारी प्रताड़ना की घटनाएं शून्य हैं, फिर भी इस घटक को और सशक्त एवं क्रियाशील बनाने की आवश्यकता है। किसी भी समाज में जितना प्रोत्साहन बच्चों को दिया जाता है उतना ही बच्चियों को देना चाहिए। वह पालनहार एवं मार्गदर्शक होती हैं। आज के युग में उनमें चिकित्सा, प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता के क्षेत्र में अभिरुचि जाग रही है। अतः पढ़ाई-लिखाई के समान अवसर प्रदान करना हमारा परम कर्तव्य है, तब ही हमारा समाज नई ऊंचाइयों पर पहुंच सकता है।

समाज के अंतिम घटक जो वयोवृद्ध होकर किसी भी समाज का सार होता है, वह अनुभवों में परिपक्व तो होता ही है त्याग का एवं संघर्षशील जीवन की भी मिसाल होता है। यह अन्य सभी घटकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है, इसकी उपेक्षा अक्षम्य है। यह पूरे जीवन की चलती-फिरती प्रयोगशाला है। कहते हैं मॉ के चरणों में स्वर्ग है तो पिता जीवन्त तीर्थ हैं।

अंतिम निष्कर्ष में मैं समाज के सभी घटकों में परस्पर समन्वय एवं सामंजस्य बनाकर एक आदर्श समाज के निर्माण में सभी को अपना-अपना योगदान करने की अपेक्षा एवं विनम्र निवेदन करना चाहूंगा। यहां यह स्मरण दिलाना भी उचित होगा कि भगवान राम ने त्रेता युग में अवतार लेकर रघुवंश के लिए जिन मर्यादाओं, आदर्शों, परम्पराओं की स्थापना की थी हम पुनः उन्हीं मर्यादाओं परम्पराओं एवं आदर्शों का पालन कर उनकी पुर्नस्थापना कर अन्य समाजों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

# वाष्पव्याकुललोचन हुए धर्मात्मा राम

## मनोज कुमार श्रीवास्तव

जब ''धर्मात्मा राम'' ''वाष्पव्याकुललोचन'' होकर सोच में पड़ गए हैं। तब सवाल यह है कि वाल्मीकि जैसा संवेदनशील कवि जो क्रौंचवध से दुखी हो जाता है क्यों राम को धर्मात्मा कहता है? इस अवसर पर जो राम इस समय स्वयं को निरपेक्ष बता रहे हैं और युद्ध करने के एक्सटर्नल कारण गिना रहे हैं, वे राम ऐसा तभी कह सकते हैं जब वे धर्म की सबसे बड़ी परीक्षा दे रहे हों। राम ने यदि सीता के प्यार की अवहेलना कर मात्र कुल गौरव, मानरक्षा, सदाचार की रक्षा के लिए ही युद्ध किया होता तो फिर युद्धकांड के 5वें सर्ग में वे ऐसा क्यों कहते -''कब वह समय आयेगा, जब शत्रुओं को परास्त करके मैं समृद्धिशालिनी राजलक्ष्मी के समान कमलनयनी समध्यामा सीता को देखूंगा''। जैसे रोगी रसायन का पान करता है उसी प्रकार मैं कब सुंदर दातों और बिम्बासदृश मनोहर ओठों से युक्त सीता के प्रफुल्ल कमल जैसे मुख को कुछ ऊपर उठाकर चूमूंगा। मेरा आलिंगन करती हुई प्रिया सीता के वे परस्पर सटे हुए, तालफल के समान गोल और मोटे दोनों स्तन कब किंचित कम्पन के साथ मेरा स्पर्श करेंगे? वह समय कब आयेगा जबकि सीता मेरे द्वारा उन दुर्धर्ष राक्षसों का विनाश करके उसी प्रकार अपना उद्धार करेगी, जैसे शरत्काल में चंद्रलेखा काले बादलों का निवारण करके उनके आवरण से मुक्त हो जाती है। मैं राक्षसेन्द्र की छाती में अपने सायकों को धंसाकर अपने मानसिक शोक का निराकरण करके कब सीता का शोक दूर करुंगा। देवकन्या के समान सुंदरी मेरी सती-साध्वी सीता कब उत्कंठापूर्वक मेरे गले से लगकर अपने नेत्रों से आनंद के आंसू बहाएगी। ऐसा समय कब आएगा जब मैं मैथिली के वियोग से होने वाले इस भयंकर शोक को मलिन वस्त्र की भांति त्याग दूंगा।''

वे ही राम विजय के क्षण अपनी वास्तविक सोच को छुपा क्यों रहे हैं? ये सब बातें तो उन्होंने लक्ष्मण से कही थीं। तो अब जब वे स्वयं को उदासीन और भग्नासक्त बता रहे हैं, तो लक्ष्मण को उनसे नहीं कहना चाहिए था- क्या सचमुच भैया? फिर वो कौन था जो मुझे युद्धकांड के पंचम सर्ग में यह भी कह रहा था- हवा! तू वहां बह, जहां मेरी प्राणवल्लभा है। उसका स्पर्श करके मेरा भी स्पर्श कर। उस दशा में तुझसे जो मेरे अंगों का स्पर्श होगा वह चन्द्रमा से होने वाले दृष्टि संयोग की भांति मेरे सारे संताप दूर करने वाला और आह्लादजनक होगा। प्रियतमा का वियोग ही जिसका ईंधन है, उसकी चिन्ता ही जिसकी दीप्तीमती लपटें हैं, वह मदनाग्नि मेरे शरीर को रात-दिन जलाती रहती है। सौमित्र!तुम यहीं रहो। मैं तुम्हारे बिना अकेला ही समुद्र के भीतर घुसकर सोऊंगा। इस तरह जल में शयन करने पर यह प्रज्वलित काम मुझे दग्ध न कर सकेगा।

मैं और वह वामोरु सीता एक ही भूतल पर सोते हैं। प्रियतमा के संयोग की इच्छा रखने वाले मुझ विरही के लिए इतना ही बहुत है। इतने से भी मैं जीवित रह सकता हूं। जैसे जल से भरी हुई क्यारी के सम्पर्क से बिना जल की क्यारी का धान भी जीवित रहता है- सूखता नहीं है उसी प्रकार मैं जो यह सुनता हूं कि सीता अभी जीवित हैं, इसी से जी रहा हूं।''

जो लोग इस घटना-प्रसंग को अग्नि परीक्षा कहते हैं वे अग्नि परीक्षा को भी नहीं जानते। हमारे शास्त्रों के अनुसार अग्नि परीक्षा में नौ हाथ लम्बा एक गड्ढा खोदा जाता है और उसमें पीपल की लकड़ी की अग्नि जला दी जाती है। इस गड्ढे में संबंधित को नंगे पैर चलना होता है। यदि पैरों को कोई नुकसान नहीं होता तो उसे

निर्दोष माना जाता था। यदि जल गए तो दोषी। यूरोप में अंगारों में नंगे पैर आंख बंद कर चलने की प्रथा थी। एडवर्ड द कन्फेसर की मां एम्मा ने इसी तरह से अपने चरित्र को प्रमाणित किया था। उस पर भी विंचेस्टर के बिशप आल्विन से घनिष्ठता का आरोप लगा था। अग्नि परीक्षा लाल गर्म लोहा पकड़कर या जलता कोयला हाथ में लेकर भी की जाती है। बिशप सिम्पलिसियस की पत्नी ने जलते हुए कोयलों को हाथों में लेकर, कपड़ों में रखकर और छाती से लगाकर अपनी निर्दोषिता को प्रमाणित किया था। मनु आपस्तंब याज्ञवल्क्य और नारद ने अग्नि परीक्षा का वर्णन किया था। अग्नि परीक्षा में एक गर्म लौह गोलक का इस्तेमाल बताया गया था। सामान्यतः जहां चीजें मानव साक्ष्य से प्रमाणित की जा सकती थीं, वहां अग्नि परीक्षा नहीं होती थी। पितामह का कहना था कि अचल संपत्ति के मामलों में ऐसी परीक्षा की अनुमति नहीं दी जा सकती। कात्यायन का कहना था कि जब उपलब्ध साक्ष्यों की जगह कोई परीक्षा देने पर उतारु हो तो वह उसकी पराजय ही है। सिर्फ अत्यन्त गंभीर मामलों में ऐसी परीक्षा होती थी। पश्चिम दिशा से पूर्व की ओर गाय के गोबर से नौ मंडल बनाए जाते थे जो अग्नि, वरुण, वायु, यम, इन्द्र, कुबेर, सोम, सविता तथा विश्वदेव के निमित्त होते हैं। प्रत्येक चक्र 16 अंगुल के अर्धव्यास का होना था और दो चक्रों का अन्तर 15 अंगुल का होता था। प्रत्येक चक्र को कुश से ढका जाता था जिस पर शाध्य व्यक्ति अपना पैर रखता था। तब एक लोहार 8 अंगुल लम्बे लौह पिंड को अग्नि में खूब तप्त करता था परीक्षक न्यायाधीश शाध्य व्यक्ति की हथेली पर सात पीपल-पत्ते अक्षत व दही के साथ डोरी बांध देता था। उसके बाद उसके दोनों हाथों पर तपते हुए लोहे के पिंड संडसी की मदद से रखे जाते थे। अपेक्षा यह की जाती थी कि पहले मंडल से आठवें मंडल तक मंद गति से चलते हुए शाध्य उन्हें नवें मंडल पर फेंकेगा। अगर उसके हाथ नहीं जले न फफोला आए तो वह निर्दोष घोषित होता था।

क्या सीता के साथ ऐसा कुछ हुआ? क्या सीता लक्जेमबर्ग की क्यूनिगुंडे की तरह व्यभिचार के आरोप में अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने गरम लाल अंगारों पर चलीं? क्या प्रथम क्रूसेड के दौरान पीटर बार्थोलोम्यू ने स्वयं ऐसी ही अग्नि परीक्षा नहीं दी थी। यह 1099 की बात थी। 1498 में गिरोलामो सोवोनरोला ने अपनी अग्नि परीक्षा देनी चाही थी। प्राचीन ईरान में 39 तरह की अग्नि परीक्षाएं होती थीं। बेदुइन जाति यानी जूडीयन, नेगेव और सिनाइ मरुस्थल वाली झूठ पकड़ने के लिए अग्नि परीक्षा करती हैं। उसमें एक तप्त धातु की वस्तु को जीभ से चाटा पड़ता है। यदि जीभ जल गई तो वह व्यक्ति झूठ बोलने वाला माना जाता है। कुछ जगह यदि घाव तीन दिन में भर जाये तो निर्दोष माना जाता है। इसलिए कवि द्वारा यह लिखना-''तात लक्ष्मण! चिता चुनो मम अग्नि-परीक्षा दूंगी/इसका ज्वाला से रघुवर के मन का तमस हरुंगी।'' परीक्षा शब्द को अपनी ओर से जोड़ना है। एक कवि मयतनया से यह कहलवाते हैं- ''मैं क्या देख रही प्रभु-सीता-अनल-परीक्षा/जिसका नाम पाप का नाशक उसकी अनल-परीक्षा'', वे पुनः ''परीक्षा'' शब्द का भ्रमवश उल्लेख करते हैं।

देखिए कि सीता की इस तरह से किसी ने परीक्षा नहीं ली। सीता तो आग जलवाकर उसमें समा गई हैं। वे मृत्यु को जैसा कि राम कहते हैं- ''एकमात्र सत्य के सहारे'' चुनौती दे रही हैं। अध्यात्म रामायण तथा रामचरितमानस में यह परीक्षा न होकर वास्तविक सीता को अग्नि से रिकवर करने का उपक्रम है, जिसमें प्रतिबिम्बरुपिणी माया-सीता या छाया-सीता वास्तविक सीता को प्रत्यक्ष कर स्वयं अदृश्य हो गयी हैं। लेकिन छाया-सीता क्या सिर्फ बॉडी डबल ही हैं या कुछ ऐसा है कि किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपहृत करने पर वास्तविक स्त्री तो कभी नहीं मिलती, उसकी छाया को भी प्राप्त करना असंभव हो जाता है। छाया-सीता ही क्यों? हम भी तो प्रायः एक दूसरे की छाया ही तो देख पाते हैं। Chuck palahnuick ने लिखा है- May be the only thing each of us can see is our own shadow. कार्लयुंग ने इसे अपना शैडो वर्क कहा था। उसने कहा-We never see others. Instead we only aspect of ourselves that fall over them. Shadows, Projections,Our associations. अपहृत छाया-सीता का अग्नि से विस्फोटित होकर बाहर आना क्या है- A woman supprerses large parts of self into the shadows of the psyche. In the view of analytical psychology, the repression of both negative and positive instincts, urges and feelings into the unconscious causes them to inhabit a shadow realm. While the ego and superego attempt to continue to censor the shadow impulses, the very pressure that repression causes is rather like a bubble in the sidewall of a tire. Eventually as the tire revolves and hests up the pressure behind the bubble intensifies, causing it to explode outward, releasing all the inner content. जब सीता का अपहरण हुआ तब क्या उन्हें अपने आत्म का दमन नहीं करना पड़ा? क्या उसी के कारण वह एक shadow realm में प्रवेश नहीं कर गईं? क्या उसी से उनके भीतर बहुत सा ताप इकट्ठा नहीं होता रहा। उस ताप से अन्ततः एक विस्फोट हुआ और एक शुद्ध-निर्मल सीता बाहर निकली। मैंने उक्त अंग्रेजी उद्धरण क्लेरिसा पिंकोला एस्टेस की पुस्तक Women Who Run With Wolves से उठाया है। सीता की आत्मा तो राम के साथ ही रह गई। रावण के हाथ तो सीता की छाया-संस्करण भी नहीं आया था जबकि स्टीवन एरिक्सन 'हाउस ऑफ चेन्स' में कहते हैं कि छाया तो हमेशा घेरे में आती है। यह उसकी प्रकृति है। छाया जब गुप्त स्थानों में लुप्त हो जाती है तो वह तमस और आलोक के बीच युद्ध होने पर ही वापस लौटती है-"Shadow is ever besieged, for that is its nature. And so one sees shadow ever retreat to hidden places, only to return in the wake of the war

between dark and light". तो यह युद्ध हुआ प्रकाश और तमस के बीच। राम और रावण के बीच। तभी सीता लौटी। इसलिए छाया-सीता के बहुत से दार्शनिक मायने हैं। इसलिए यह अवधारणा भी लोकप्रिय हुई। कूर्म पुराण ने सबसे पहले माया सीता का सिद्धान्त पेश किया। मलयालम और उड़िया रामकथाओं में भी यही प्रविधि अपनाई गई। राधेश्याम रामायण भी यही विधि अपनाती है। मूल चिन्ता वहां राम के व्यवहार की नहीं है। अग्नि परीक्षा एक अकलंकित सीता की वापसी का यंत्र है। महाभारत का रामोपाख्यान, विष्णु पुराण, हरिवंश व कई पुराण अग्नि परीक्षा का उल्लेख नहीं करते। 'पउमचरियु' में अग्नि परीक्षा की ओर इशारा है। वहां एक अग्निकुंड है जो सीता के कदम धरते ही साफ जल से पूरित हो जाता है और सहसा सीता सहस्त्र कमल दल पर आसीन दीख पड़ती हैं। ''हिन्दी रामकाव्य का स्वरुप और विकास'' पुस्तक का लेखक कहता है-''रामायण में अग्नि परीक्षा की कथा राम के मनोवैज्ञानिक अन्द्वन्द्व तथा सामान्य युगीन पौरुष की सहज परिणति है। राम द्वारा सीता के चरित्र पर संदेह जहां वाल्मीकि की मानवीय यथार्थ को ग्रहण करने वाली अन्तर्दृष्टि का परिचय देता है, वहां तत्कालीन सामंती या अभिजात वर्ग की मानसिकता का भी उद्घाटन होता है।'' विदेह और भरुण रामायण काव्यों में इसे राम की शंका और अविश्वास बनाकर उनकी विक्षुब्ध मन:स्थिति के रुप में बताया गया है। पउमचरियु में स्वयं राम तीन सौ हाथ गहरा अग्निकुंड खोदने का आदेश देते हैं जो वाल्मीकि रामायण के विपरीत ही है। वहां अग्निकुंड जब सीता के प्रवेश के साथ जल से भरता है तो वह धीरे-धीरे उमड़कर सर्वत्र फैल जाता है और जनता सीता को बचाने की प्रार्थना करने लगती है। सीता जल को छूकर उसे सीमित कर देती हैं। राम जब सीता से क्षमा याचना कर उसे साथ अयोध्या चलने को कहते हैं तो सीता उनके प्रस्ताव को ठुकराकर दीक्षा ले लेती हैं। पुन: यह वाल्मीकि रामायण के विपरीत है। मसीही रामायण में राम सीता को उठाकर अग्नि में डालते हैं। सेरीराम में चिता हनुमान तैयार करते हैं। कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी ग्रामगीत की चर्चा करते हैं। जिसमें सीता अग्नि हाथ में लेती हैं जो ठंडी हो जाती है। सूर्य हाथ में लेती हैं जो अस्त हो जाता है। सर्प हाथ में लेती हैं जो फण फैलाकर बैठ जाता है, गंगा हाथ में लेती हैं तो वह सूख जाती है, तुलसी हाथ में लेती हैं तो वह भी सूख जाती है। ओशो भी इसी तरह कहते हैं-''राम ने सीता की अग्नि परीक्षा ली, लेकिन कोई भी यह नहीं पूछता कि सीता ने राम से क्यों नहीं कहा कि तुम भी अग्नि परीक्षा से गुजरो? राम भी अकेले थे और किसी स्त्री से उनका भी संबंध हो सकता था। लेकिन राम से सवाल ही नहीं उठा इतने हजार वर्षो में कि अग्नि परीक्षा इनकी भी ली जाय। उस गरीब स्त्री की अग्नि परीक्षा भी ले ली गई और फिर भी उसे धक्के देकर घर से निकाल दिया गया। राम ने जो दुनिया बनायी है, अब राम तो नहीं हैं आज लेकिन राम जिस ढंग से जिए, उससे वह पुरुष को हमेशा के लिए मजबूत कर गए और स्त्री को हमेशा के लिए कमजोर कर गए।'' दूसरी ओर पं. किशोरीदास वाजपेयी इस पूरे प्रसंग को वाच्यार्थ-भ्रम का उदाहरण मानते थे-''सीता की अग्नि परीक्षा का भी वाच्य अर्थ ही ले लिया गया। उस भीषण परिस्थिति में भी उन्होंने अपने धर्म की पूर्णत: रक्षा की- वे उस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। 'अग्नि-परीक्षा' का भी वाच्यार्थ लेकर कहानी गढ़ी गई- बड़े-बड़े लक्कड़ इकट्ठे करके उनमें आग लगा दी गई और उनसे कहा गया कि इसमें कूदकर परीक्षा दो! कहते हैं सीता जी उस धधकती आग में कूद पड़ीं और ज्यों की त्यों जीवित निकल आईं, उनकी यह अग्नि परीक्षा हो गयी। हिन्दी की वर्तनी और शब्द प्रयोग मीमांसा में भी इसे दुहराया गया-''साधारण और प्रचलित प्रयोग है- 'अग्नि परीक्षा'। कोई बड़े से बड़े संकट में भी अपना स्वरुप, धर्म, इज्जत बचा ले तो कहा जाता है उसकी अग्नि परीक्षा हो चुकी।' वह अग्नि परीक्षा में खरा उतरा। इस अग्नि परीक्षा का भी वाच्य अर्थ समझ लिया गया और कहा जाने लगा कि लंका में अग्नि प्रज्वलित की गई और सीता जी उसमें कूद पड़ीं और फिर ज्यों की त्यों बाहर आ गईं!

कथा परित्सागर में भी अग्नि परीक्षा का उल्लेख नहीं है। नरेन्द्र कोहली ने जो रामकथा कही, वहां भी अग्नि परीक्षा नहीं है। राम का वहां कथन है ''इस युद्ध में राक्षसों ने मेरे शरीर पर सैकड़ों घाव किए हैं, फिर भी तुम मेरा नाम रटती रहीं। तुमने कभी सोचा कि मेरा शरीर पतित हो गया है और भ्रष्ट हो चुका है और अब मैं तुम्हारे योग्य नहीं रहा?' इस राम के अनुसार सतीत्व मन से होता है, शरीर से नहीं इसलिए यहां पर सीता की अग्नि परीक्षा नहीं होती और रावण के नियंत्रण में इतने समय तक राम की प्रतीक्षा में जो जीवन जिया है, उससे बढ़कर क्या अग्नि परीक्षा हो सकती है। मणिमाला 'परम्परा और आधुनिकता के बीच' निबंध में लिखती है- 'सीता के नाम पर सबसे पहले हमें अग्नि परीक्षा की याद आती है। पति की स्वीकृति के लिए तड़पती कलपती एक औरत, जो जिंदा आग में कूद कर अपनी यौनशुचिता का सबूत देना चाह रही है। वह जो हमेशा राम के पीछे-पीछे चली आई। वह जिसका अपना व्यक्तित्व है ही नहीं।'' 'कुवेम्पुरामायण' और 'दूसरी सीता' ये दो कृतियां अग्नि परीक्षा को दो तरह से चित्रित करती हैं। कुवेंपु रामायण में सीता खुद स्वेच्छया अपनी निष्कलंकता साबित करने के वास्ते अग्निप्रवेश कर जाती हैं न कि राम की आज्ञा या आशा से। यज्ञ की अग्नि से जनमे श्रीराम सीता के साथ स्वयं भी अग्नि में प्रवेश करते हैं और अग्नि में दिव्यकुंदन बनी सीता का दुबारा पाणिग्रहण कर अग्नि से बाहर आते हैं। यों पति भी अपनी निष्कलंकता सिद्ध करते हैं। स्नेहलता रेड्डी के नाटक 'दूसरी सीता' में सीता अग्नि परीक्षा देने से इन्कार कर देती हैं। राम को अपने साथ अग्नि परीक्षा देने के लिए ललकारती हैं। राम के तैयार न होने पर वे स्वेच्छया रावण के साथ जाना स्वीकार कर लेती हैं।'

सीता नामक एक खंडकाव्य भी है। वहां यह बताया गया है कि नैतिक नियमों को दृष्टि में रख राम ने सीता की अग्नि परीक्षा ली।

संभवतः यह राम के निजी शंका-निवारण के लिए किया गया आयोजन नहीं था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम अपनी प्रजा, अपनी जनता और अपने राजमहल के संबंधियों के सामने यह प्रमाणित करना चाहते थे कि सीता निष्कलंक है। इस खंडकाव्य में कारागृह से मुक्ति के बाद उनके सामने जब सार्वजनिक अग्नि परीक्षा का प्रस्ताव रखा गया तो वे खिन्न हो उठीं और उन्होंने अपने मन में राम के सामने वही तर्क उपस्थित किया- क्या महाबली मारुति ने/तुमको था नहीं बताया?/ मैंने शाश्वत पातिव्रत/लंका में कवच बनाया। यद्यपि सीता अग्नि परीक्षा के इस आकस्मिक आयोजन को वहां स्वीकार करती हैं। उन्हें इससे अप्रत्याशित धक्का भी लगता है। उन्हें इसकी आशा नहीं थी। उनके मन में राम के असाधारणत्व के प्रति संशय का कीड़ा तो पैठ ही जाता है। वे उनके असाधारणत्व पर प्रश्नचिन्ह तो लगा ही देती हैं- 'संशय के उस इक क्षण में/तुम साधारण बन बैठे!/सारी महानता त्यागी/जब परित्याग कर बैठे।' स्वामी विवेकानंद पर लिखी गई एक प्रस्तुक 'न भूतो न भविष्यति' में इसका उत्तर यों दिया गया है- 'भगवान राम ने सीता की अग्नि परीक्षा क्यों ली? किसी व्यक्ति की परीक्षा लेने के लिए उसे अग्नि में प्रविष्ट कराना तो कोई मानवता नही है।' भगवान राम ने सीता माता को अग्नि में प्रविष्ट कराया क्योंकि वे भगवान थे। अग्नि में प्रविष्ट कराकर भी वे उनकी रक्षा कर सकते थे।' सन्यासी मुस्करा रहे थे। 'यह तो कोई उत्तर न हुआ।। मन्मथ बाबू बोले, 'अवतार बनकर मानव लीला कर रहे थे, तो मानव के समान ही आचरण करना चाहिए न।' ठीक कह रहे हैं आप। सन्यासी पुनः उनसे सहमत हो गए। परंतु आप यह बताइए कि यदि कोई मनुष्य- आप या मैं अग्नि में प्रवेश कर कहे हे अग्निदेव! मैं सच्चा हूं, इसलिए मुझे जलाना मत।' तो क्या वह जलने से बच जायेगा।' नहीं! 'मन्मथ बाबू बोले, 'प्रकृति के नियम नहीं बदल सकते।' तो फिर आपने अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं दे दिया। सन्यासी बोले- या तो मान लीजिए कि वे भगवान थे और लीला कर रहे थे या फिर यह मान लीजिए कि मनुष्य के लिए न तो यह संभव है कि वह अग्नि में प्रवेश कर जीवित ही नहीं सुरक्षित निकल आए, न यह संभव है कि वह किसी और को अग्नि में प्रवेश कराये और उसे वहां से जीवित निकाल लाये। इसलिए न यह परीक्षा ली गयी न वह परीक्षा दी गयी। यह तो कवि की सुंदर कल्पना मात्र है।

अपभ्रंश के महाकवि हैं स्वयंभू। उनकी सीता अत्यन्त तेजस्विनी हैं। वे अग्नि परीक्षा के समय राम को काफी खरी-खोटी सुनाती हैं-'गुणवान पुरुष भी हीन होते हैं, मरती हुई स्त्री पर भी विश्वास नहीं करते।' अग्नि परीक्षा के उपरान्त खरी निकलने यही सीता राम को कहती हैं- 'न तुम्हारा दोष है, न समूह का। दोष तो दुष्कृत कर्म का है और इस दोष से मुक्त होने का एकमात्र उपाय यही है कि ऐसा किया जाए जिससे फिर स्त्री योनि में जन्म न लेना पड़े।' प्रतिक्रिया से डॉ. नामवर सिंह कहते हैं-ऐसी महिमामयी नारी को कर्मफल विश्वासी जैन कवि नीचे उतारकर रख देता है। आग से तपकर असली सीता तो शायद खरे सोने की तरह और भी कान्तिमयी होकर निकली होगी लेकिन स्वयंभू की सीता कर्मफल की विभूति रमाए बाहर आई... कवि को क्या पता कि उसकी सृष्टि अग्नि-प्रवेश से पहले जितनी ही तेजोमयी थी, उससे निकलने के बाद उतनी ही म्लान भस्मावृत चिनगारी मात्र रह गई। गिरिजाशरण अपने एक एकांकी में कहते हैं-'चरम ऐहिक सभ्यता के अंधकार में डूबे हुए इस प्रदेश में आर्य नारी के चरित्र के उदात्त आलोक के प्रसार के निमित्त सीता को अग्नि परीक्षा देनी ही होगी।

-सुंदरकांड एक पुर्नपाठ भाग-11 से साभार-

पेज 01 का शेष

## जाके पैर पड़ी...

बाकी नहीं रहा, अपनी दरिद्रता ढकने के लिए, अपने गर्व का पोषण करने के लिए कुछ भी नहीं रहा, ऐसे तुम इतने महान कभी नहीं थे! जो गहराई में जागता है वह शिखर के कितने समीप होता है! कारण, खाई जितनी अधिक गहरी होती है, ऊंचाई उतनी ही अधिक प्रकट होती है! यदि अग्नि परीक्षाओं या त्रुटियों ने तुम्हें पछाड़ दिया है, यदि तुम दुख के अथाह गर्त में डूब गये हो तो जरा भी शोक न करो क्योंकि वस्तुतः वहीं पर तुम्हें मिलेगा भगवान का स्नेह, उनका परम आशीष! क्योंकि तुम पावनकारी दुखों की अग्नि में तप चुके हो, इसलिए अब तुम्हें गौरवमय शिखर मिलेंगे। यदि तुम बंजर बीहड़ में हो तो सुनो नीरवता की वाणी। बाहर की स्तुति और प्रशंसा का कलरव ही तुम्हारे कानों को सुख देता रहा, अब नीरवता की वाणी तुम्हारी आत्मा को सुख देगी, तुम्हारे अंदर जाग्रत करेगी गहराइयों की प्रतिध्वनि, दिव्य स्वर-संगतियों का नॉद! तुम यदि गहन रात्रि में चल रहे हो तो रात्रि की अमूल्य सम्पदा संग्रह करते चलो। सूर्य का उज्जवल प्रकाश बुद्धि के मार्ग आलोकित कर देता है, किन्तु रात्रि की श्वेत प्रभा में पूर्णता के गुप्त पथ दृष्टिगोचर होते हैं, आध्यात्मिक सम्पदाओं का रहस्य खुलता है, और तुम नग्नता और अभाव के मार्ग पर हो तो यह प्रचुरता का मार्ग है। जब तुम्हारे पास कुछ न बचेगा तो तुम्हें सब कुछ दिया जायेगा, क्योंकि जो सच्चे और सीधे हैं उनके लिए बुरे से बुरे में से सदा भले से भला निकल आता है। जमीन में बोया हुआ एक दाना हजारों दाने पैदा करता है। दुख के पंखों का प्रत्येक स्पन्दन गौरव की ओर ले जाने वाली उड़ान बन सकता है और जब शत्रु मनुष्य पर क्रुद्ध हो टूट पड़ता है तो वह उसके नाश के लिए जो कुछ करता है वही उसे महान बनाता है।

श्रीमॉ के अनुसार उत्कृष्ट उदारता है प्रेम की अभिव्यक्ति। हर चीज का सम्बंध अपने साथ जोड़ने की आदत से हम जितना ऊपर उठेंगे उतना ही सचमुच प्रभावशाली उदारता को अपनी क्रियाओं में ला सकेंगे और यह उदारता प्रेम के साथ एक है।

-अरुण पटेल

# विश्व-पटल पर रामकथा की व्याप्ति

हरिविष्णु अवस्थी

ऋग्वेद की गणना भारत के ही नहीं विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ के रुप में होती है। श्री रामधारी सिंह दिनकर ने श्री चिन्तामणि वैद्य का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वैद्यजी का मानना था कि ''ऋग्वेद दशम मण्डल में जिस रामकथा का उल्लेख है वे वास्तव में दाशरथी रामचन्द्र ही थे।'' वैदिक साहित्य में इक्ष्वाकु, राम, सीता, दशरथ, जनक, अश्वपति, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य और भरद्वाज नामों का उल्लेख मिलता है। किन्तु यह सब नाम परस्पर सम्बद्ध नहीं हैं। अस्तु इन नामों के आधार पर अधिकांश विद्वान चिन्तामणि वैद्य के मत से सहमत नहीं हैं।

रामकथा के आदि गायक तो महर्षि वाल्मीकि ही हैं। वाल्मीकि श्रीराम के समकालीन ही नहीं वे रामकथा के एक पात्र भी हैं। वाल्मीकि द्वारा गाई गई रामकथा की ऐतिहासिकता पर भी विद्वान एक मत नहीं हैं। किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि 'रामायण' प्राचीन भारत का राष्ट्रीय काव्य है। भारतीय आर्य भाषा की सांस्कृतिक काव्य-परम्परा का श्रीगणेश आदि काव्य वाल्मीकि 'रामायण' से ही होता है। प्राचीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन हिन्दी तथा लोक भाषाओं में रामकथा गुम्फित है। सभी भारतीय भाषाओं में बारहवीं शताब्दी से रामकथा की काव्यमय रचनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। कतिपय भाषाओं में इसके पूर्व भी रामकथा की रचनाएं हुई हैं।

धीरे-धीरे रामकथा का प्रचार-प्रसार भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी हुआ। उनकी जीवनगाथा पर अनेक ग्रंथों की रचना हुई। जिनमें क्षेत्र, परम्परा, रुचि तथा लेखकीय भावनाओं के अनुरुप कुछ अंतर और विरोधाभास भी आये और यह स्वाभाविक ही था। एक मान्यता यह भी है कि प्रत्येक कल्प में राम अवतार हुए, जिनकी जीवन गाथाओं में भिन्नता रही है। यही भिन्नता इन कथाओं में प्रकट हुई है। रामायण, राम के माध्यम से युग-युग के मनुष्य की निष्ठा, आत्मसम्मान, संगठन-शक्ति, साहस और शौर्य का इतिहास है। ऐसा इतिहास जो बीत गया, जो बीतेगा। जो सांस-सांस में जीवित है। मानव की पवित्रता का इतना प्रबल बोध शायद ही किसी अन्य ग्रंथ में हो। रामायण महाकाव्य न केवल अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है अपितु वह सनातन प्रतिनिधि भी है। प्रतिनिधि ही नहीं नेता है। प्रेरक है। किसी भी वर्ग का मनुष्य हो, किसी भी देश का मनुष्य हो, सभी राम के चरित्र से प्रेरित होते हैं।

मनुष्य कैसे पूर्ण बन सकता है? संसार का अधिकतम सुख कैसे प्राप्त कर सकता है? कैसे रोज-रोज की ईर्ष्या और कलह से बच सकता है? कैसे अपने और समाज के असामर्थ्य को पराक्रम में बदल सकता है? यह सब रामायण/रामकथा बताती है। रामकथा एक साथ समूह और व्यक्ति दोनों विधा की निर्माता है। समष्टिवादी और व्यक्तिवादी दोनों के वाद को लेकर एक साथ चलने का विधान भी रामकथा में है। रामकथा सामूहिक कल्याण के प्रति सावधान है। यूरोपीय भाषाओं में रामकथा का प्रचार-प्रसार सत्रहवीं शताब्दी से आरंभ होता है। उन्नीसवीं शताब्दी में सर्वप्रथम एच.एन. विल्स ने रामायण की व्याख्या करके उसे रायल ऐशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित करायी थी। इसके बाद एल.पी. टेस्सिट्री, जे.एन. कारपेन्टर, सर जार्ज ग्रियर्सन ने व्यवस्थित रुप से रामकथा को प्रकाशित कराया। बीसवीं शताब्दी में फादर कामिल वुल्के ने रामकथा पर महत्वपूर्ण कार्य किया। उपर्युक्त के अतिरिक्त विश्व के अन्य विभिन्न देशों में रामकथा साहित्य, शिलालेखों, भित्ति, चित्रों, मंदिरों और विभिन्न देवी देवताओं के विग्रहों के रुप में विद्यमान है, जो रामकथा के विश्वव्यापी होने का ज्वलंत प्रमाण है। विदेशी विद्वानों ने रामकथा पर अपने-अपने ढंग से कलम चलाई है। विश्व के विभिन्न देशों में रामकथा जिस रुप में व्याप्त है, उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है-

**नेपाल-** यहां के राष्ट्रीय अभिलेखागार में वाल्मीकि की दो प्राचीन पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। इसमें एक पाण्डुलिपि ''किष्किंधा काण्ड'' की पुष्पिका पर नेपाल नरेश गांगेयदेव का नाम अंकित है। इसकी तिथि वि.सं.1076 यानी 1019 ई. है। दूसरी पाण्डुलिपि नेपाली संवत 795 यानी 1764 ई. की है। भानुभक्त आचार्य 1814-1968 ई. ने 1833 में पाली भाषा में 'रामायण' की रचना आरंभ की। सन् 1849 में रामायण का बालकाण्ड तथा कारागार में रहते हुए उन्होंने अयोध्या काण्ड एवं सुंदरकाण्ड की रचना की। अगले वर्ष शेष 2 भाग पूर्ण किए। इस प्रकार 11 वर्षों में रामायण पूरी हुई सन 1954 ई. में भारत जीवन प्रेस काशी से इनका प्रकाशन हुआ। इस रामायण की कथा का आधार अध्यात्म रामायण है। तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरित मानस को जो लोकप्रियता भारत में प्राप्त है उतनी ही लोकप्रियता नेपाल में भानुभक्त की रामायण को प्राप्त है। इसके पूर्व नेपाली रामकाव्य परंपरा में गुमानी पंत और रघुनाथ भट्ट का नाम उल्लेखनीय है। रघुनाथ भट्ट कृत 'रामायण सुंदरकाण्ड' की रचना 19वीं शती के पूर्वार्द्ध में हुई और इसका प्रकाशन 'नेपाल साहित्य सम्मेलन' दार्जिलिंग द्वारा 1932 ई. में हुआ। 'सुंदरानंद रामायण' एवं 'आदर्श राघव' नाम से भी नेपाली भाषा में रामकथा की रचना हुई।

**मिथलांचल-** मिथला में रामकथा की रचना स्फुट परंपरा का आरंभ चन्द्र झा रचित मिथला भाषा रामायण से होता है। इसका प्रथम प्रकाशन 1891 ई. में हुआ। दूसरा प्रकाशन 1909 ई. में तीसरा प्रकाशन 1931 ई. में तथा गुटका के रुप में 1949 ई. में हुआ। यह मूलत: अध्यात्म रामायण पर आधारित है। इसमें सात

सर्ग हैं। इसके बाद लालदास रचित 'रमेश्वर चरित' को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसमें सात काण्डों के अतिरिक्त आठवां 'पुष्कर कांड' भी है। पं. तेजनाथ कृत 'राम जन्म', पं. जीवननाथ झा रचित 'रावण वध' श्री वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' रचित महाकाव्य 'सीताराम'पं. विश्वनाथ झा का 'राम सुयेश सागर', रमाकन्त व्यथा', भुवनेश्वर प्रसार रचित 'मैथिल बाल रामायण', श्रीमती ध्यामा देवी कृत 'मैथली रामायण', राजलक्ष्मी कृत 'विभीषण शरणापन्न' साहेब रामदास कृत 'हनुमान फागु' के अतिरिक्त लक्ष्मीनाथ गोसांई एवं अजूबा दास ने भी मैथली में राम काव्य की रचना की। आधुनिक परंपरा में मोदलता, स्नेहलता, रसनिधि, नेमिलता, रुपलता तथा नारायण भक्त श्रीमाली राम कथा के सृजन में निरत हैं।

**म्यामार** (बर्मा)- यहां के क्यानझित्था नरेश 1084-1113 तो स्वयं को भगवान राम का वंशज ही मानते थे। वर्मा में अधिकांश नगरों के नाम राम के नाम पर मिलते हैं जैसे रामवती नगर। यहां राम को यम, सीता को शिंडा, लक्ष्मण को लखन एवं परशुराम को पशुयान कहते हैं। अमरपुर के एक बिहार में लक्ष्मण, सीता और हनुमान के चित्र आज तक अंकित हैं। यहां 'यंम जटडों' नाम से रामायण प्रचलित है। अठारहवीं शताब्दी के लगभग यू-तो- की द्वारा 'रामांयागन' की रचना वर्मी भाषा में की गई थी जिसे यहां पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त है।

**तिब्बत** - तिब्बती रामायरण की 6 प्रतियां 'तनु-हुआंग' नामक स्थान से प्राप्त हुई हैं। उत्तर पश्चिम चीन में स्थित 'तनु हुआंग' पर 787 से 858 तक तिब्बतियों का अधिकार था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इसी अवधि में इन गैर बौद्ध परंपरावादी रामकथाओं का सृजन हुआ। तिब्बत की सबसे प्रामाणिक रामकथा 'किरंस-पुंस-पा' है जो काव्यादर्श की श्लोक संख्या 297 और 289 के संदर्भ में व्यवस्थित हुई है और जो तिब्बती रामायण से जानी जाती है।

**चीन**- चीनी प्राच्यविद एवं इतिहासज्ञ जी जियानलिन ने 1960-76 ई. के दौरान वाल्मीकि रामायण का संस्कृत से चीनी भाषा में अनुवाद किया। इस कार्य हेतु हमारी भारत सरकार ने उनहें 2008 ई. में पद्मभूषण से सम्मानित किया था। इण्डो चाइना में रामकथा 'राम कीर्ति' या 'राम केर्ति' तथा 'खमैर रामायण' नाम से उपलब्ध है। चीनी साहित्य में रामकथा पर आधारित कोई मौलिक रचना नही है।

**रुस**- रुस के काल्मिक प्रदेश के शहर एलिस्ता में काल्मिक भाषा में रामायण प्रकाशित हुई है। रुस के प्रसिद्ध हिन्दी समर्थक अलैक्सेई वारान्निकोव ने रामचरित मानस का रुसी तथा निकटवर्ती अन्य देशों में रामकथा का प्रचार किया। रुस में तीसरी से नौवीं शताब्दी के बीच तिब्बती और खेतानी भाषा में लिखी संक्षिप्त रामकथाएं प्राप्त होती हैं, जो उन दिनों काफी लोकप्रिय थीं। श्रीमती नतालिया गुलेवा ने रामकथा पर बच्चों के लिए रंग मंचीय नाटक तैयार किए हैं।

**थाईलैण्ड**- यहां के पुराने रजवाड़ों में भारत की भांति ही राम पादुकाएं लेकर राज्य करने की परंपरा पाई जाती है। यहां के निवासी अपने को रामवंशी मानते हैं। यहां अजुढिया, लवपुरी और जनकपुरी जैसे नामों वाले नगर हैं। यहां पर मंदिरों में स्थान-स्थान पर रामकथा के प्रसंग चित्रित हैं। थाईलैण्ड भारतीय आदि संस्कृति का एक दूसरा स्तंभ है। रामायण का प्रचार यहां घर-घर में है। जब मूल रामकिएन 1767-1782 ई. यहां के सम्राट बने तब उन्होंने थाई भाषा में रामकाव्य 'रामकिएन' की छंदोबद्ध रचना 4 खण्डों में 2012 पदों में की। सम्राट राम 1782-1809 ने अनेक कवियों के सहयोग से रामकिएन की पुनः रचना कराई जिसमें 50,188 पद हैं। यह थाई भाषा की पूर्ण रामायण है।

**कम्बोडिया**- यहां हिन्दू सभ्यताओं के अन्य अंगों की भांति रामायण का प्रचलन वर्तमान समय तक है। छठी शताब्दी के एक शिलालेख के अनुसार यहां कई स्थानों पर रामायण तथा महाभारत का पाठ होता था। यहां खमैर भाषा में रामकोर/रामकेर/रीमकेर/रामकीर्ति आदि विभिन्न नामों से रामकथा लिखी गई है। यह वाल्मीकि रामायण का कम्बोडियाई संस्करण है।

**मलेशिया**- यहां रामकथा का प्रचार वर्तमान काल तक है। यहां के मुस्लिम धर्मावलम्बी भी अपने नाम के साथ बहुधा राम, लक्ष्मण और सीता के नाम जोड़ते हैं। मलेशियाई भाषा बहासा मेलायू में यहां 'हिकायत सेरी राम' नाम से रामकथा उपलब्ध है। इसका लेखक अज्ञात है। इसका रचनाकाल 1400-1500 ई. माना जाता है। इसके अतिरिक्त मैक्सवेल द्वारा सम्पादित 'सेरीराम', विंसटेड द्वारा प्रकाशित पातानी रामकथा और ओवरवेक द्वारा प्रस्तुत 'हिकायत महाराज रावण' के नाम उल्लेखनीय हैं। 'हिकायत सेरीराम' का फ्रांसीसी लेखक पियरे वर्नार्ड लाफोट ने फ्रेंच भाषा में अनुवाद 'फोम्स चक' शीर्षक से किया है।

**जावा**- यहां श्रीराम राष्ट्रीय पुरुष के रुप में सम्मानित हैं। यहां की सबसे बड़ी नदी का नाम 'सरयू' है। रामायण के अनेक प्रसंगों के आधार पर यहां अब भी रात-रात भर कठपुतलियों का नाच होता है। यहां के मंदिरों में वाल्मीकि रामायण के श्लोक स्थान-स्थान पर अंकित हैं। यहां की भाषा में रामकथा- 1.लेखराम 2. सैरी राम, 3. रामकेलिंग तथा 4. पातानी ग्रंथों के रुप में उपलब्ध हैं।

**सुमात्रा**- द्वीप का वाल्मीकि रामायण में 'स्वर्ण भूमि' नाम दिया गया है। रामायण यहां के जन-जीवन में वैसे ही अनुप्राणित है जैसे भारतवासियों में है।

**बाली**- यह द्वीप भी थाईलैण्ड, जावा और सुमात्रा की भांति भारतीय आदि संस्कृति का एक दूसरा सीता स्तंभ है। रामायण का प्रचार यहां घर-घर में है।

**मंगोलिया**- चीन के उत्तर पश्चिम में स्थित मंगोलिया के लोगों को रामकथा की विस्तृत जानकारी है। दाम्दिनसुरेन नामक एक मंगोलियाई लेखक और भाषाविद् ने मंगोलियाई और कल्मिक भाषा में लिखित चार रामकथाओं की खोज की है।

**खेतानी रामायण**- मध्येशिया में चीनी तुर्किस्तान ;सिंकियांगद्ध की मरुभूमि के दक्षिणी सिरे पर एक नगर खेतान कहा जाता है जिसकी भाषा खेतानी है। एच.डब्ल्यू. बेली, पेरिस पाण्डुलिपि संग्रहालय से, खेतानी रामायण को खोजकर प्रकाश में लाये। उनकी गणना के अनुसार इसकी तिथि नवम् शताब्दी है। खेतानी रामायण अनेक स्थानों पर तिब्बती रामायण के समान है।

**जापान**- यहां के एक लोकप्रिय काव्य संग्रह 'होबुत्शूथू' संक्षिप्त में संकलित है। इसकी रचना 12वीं शताब्दी में तैरानों यसुयोरी ने की थी। इसमें रामकथा का उल्लेख मिलता है।

**लाओस**- रामकथा संबंधी दो ग्रंथ यहां 'फोलोक फालम' तथा 'फोमचक्र' नाम से मिलते हैं। लाओस की रामायण यहां का राष्ट्रीय महाकाव्य है। लाओस में प्रचलित रामायण की गाथा वट-पा-केन' मंदिर में सुरक्षित है। 20-20 पृष्ठों में इसके 40 भाग हैं। इसी तरह रामायण की एक दूसरी पाण्डुलिपि 'वट सिस्केत' मंदिर में सुरक्षित है।

**वियतनाम**- यहां का पूर्व नाम 'चम्पा' था। 'केंत्रो-किउ' नामक स्थान में राजा प्रकाश धर्म 'प्रथम' के एक शिलालेख में आदि कवि वाल्मीकि का स्पष्ट उल्लेख है-'कवोराधस्य महर्षि वाल्मीकि' तथा उसी में वाल्मीकि के प्राचीन मंदिर का उल्लेख है।

**इण्डोनेशिया**- इस मुस्लिम बहुत देश में तो रामायण को राष्ट्रीय पवित्र पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है। यहां न्यायालयों में प्रायः रामायण पर ही हाथ रखकर सत्य भाषण की शपथ ली जाती है। लगभग 870 ई. में मेडंग साम्राज्य में रचित 'काकविन रामायण' सर्वमान्य कथा है। विद्वानों के अनुसार 'काकविन रामायण' की रचना छठी-सातवीं शताब्दी में भारतीय संस्कृत कवि भट्टि विरचित 'रावण वध' पर आधारित है। इसमें 26 सर्ग तथा 2778 पद हैं। काकविन रामायण को 'काकाविल' भी कहा जाता है। बहासा इण्डोनेशियायी भाषा में रचा गया है।

**फिलीपीन्स**- सन 1768 ई. में प्रो. जॉन आर फ्रांसीस्को ने स्थानीय इस्लामी मरानियों जाति के लोगों में रामायण की एक संक्षिप्त कथा पायी थी। जिसका नाम 'महारादिया लावन' यानी महाराजा रावण है। उसमें राम को एक प्राचीन अवतार कहकर प्रस्तुत किया है।

**फ्रांस**- फ्रांसीसी विद्वान गार्सादतासी ने फ्रांसीसी भाषा में 'इस्त्वार दला लितरात्योर इंदुई ऐं हिन्दुस्तानी' नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास दो भागों में 1839 और 1846 ई. में प्रकाशित कराया। इसका दूसरा संस्करण तीन भागों में सन 1871 ई. में प्रकाशित हुआ। गार्सादतासी भारतीय साहित्य और संस्कृति से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने रामायण के 'सुंदरकाण्ड' का अनुवाद फ्रेंच भाषा में किया। ईनीविल ने फ्रेन्च भाषा में स्वतंत्र रुप से रामकथा की रचना की। पियरे बर्नार्ड लार्फोट नामक एक फ्रांसीसी लेखक ने 'फ्रा-लाक-राम' का संक्षिप्त फ्रांसीसी संस्करण 'फ्रोमचक्क' शीर्षक से प्रकाशित किया। फ्रांसीसी विदुषी शार्तल वोद्विल ने मानस के रचना क्रम का गंभीर विश्लेषण किया है।

**इटली**- यहां के विद्वान डॉ. लुहजीपियों टेसीटेरी ने रामकथा पर शोधकार्य इटैलियन भाषा में करके फलोरेंस विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि अर्जित की है।

**इंग्लैंड**- वाल्मीकि रामायण का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद फ्रेडरिक सालमन ने सन 1883 ई. में किया था। 'रामचरित मानस' का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद एफ.एस. ग्राउज ने सन् 1871 ई. में किया था। फादर कामिल बुल्के ने तो अपना पूरा जीवन ही 'रामचरित मानस' के अध्ययन, अध्यापन एवं प्रचार- प्रसार में लगा दिया।

**इण्डो चायना (हिन्द चीन)**- हिन्द चीन के अनाम में कई शिलालेख मिले हैं जिनमें राम का यशोगान है। यहां के निवासियों में ऐसा विश्वास प्रचलित है कि वे वानर कुल से उत्पन्न हैं और श्रीराम नाम के राजा यहां के सर्वप्रथम शासक थे। रामायण पर आधारित कई नाटक यहां के साहित्य में मिलते हैं।

**श्रीलंका**- यहां कई रुपों में राम कथा प्रचलित है। लोकगीतों के अतिरिक्त राम लीला की ही भांति यहां नाटक खेले जाते हैं। लंका नरेश धातुसेन कवि थे। उन्होंने 'जानकी हरणम' नामक महाकाव्य की रचना की। यह संस्कृत का उत्कृष्ट महाकाव्य है। बारहवीं शताब्दी में किसी अज्ञात कवि ने इसका सिंहली भाषा में शब्दशः अनुवाद किया। सन 1852-1921 ई. में सीडान नामक लेखक ने सिंहली भाषा में रामायण का अनुवाद किया है। जान डिसिल्वा जैसे सिंहली नाटककारों ने रामकथा पर आधारित नाटकों की रचना की।

**मैक्सिको एवं मध्य अमरीका**- मैक्सिको की 'मय सभ्यता और इन्का' सभ्यता पर प्राचीन भारतीय संस्कृति की जो छाप मिलती है उसमें रामायणकालीन सस्कारों का प्राचुर्य है। पेरु में राजा अपने को सूर्यवंशी ही नहीं कौशल्या सुत राम के वंशज मानते हैं। 'राम सीतव' नाम से आज भी यहां रामसीता महोत्सव मनाया जाता है। मीलों क्लेब लैंड ने बाल साहित्य के रुप में रामकथा को 'एडवेंचर आफ राम' शीर्षक से लिखकर प्रकाशित कराया है। इस प्रकार विश्व के विभिन्न देशोंमें रामकथा की व्याप्ति इसके कालजयी होने का प्रमाण है। रामकथा में विश्व मानवता को नवीन चेतना देने की क्षमता पूर्ववत आज भी विद्यमान है तथा उसके शाश्वत जीवन मूल्यों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आज के अनास्थावादी युग में तो रामकथा का महत्व और भी अधिक बढ़ता जा रहा है।

आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में यह स्थिति है कि हम मूल को न सींचकर पत्तों को सींचने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसी कारण सारा संसार संकटग्रस्त हो रहा है। यदि हम रामकथा के अनुसार कार्य करें तो स्वराज्य और सुराज दोनों की आदर्श स्थिति लाई जा सकती है। रामकथा का अर्थ है आनंद, सुख और शांति।

-तुलसी मानस भारती से साभार

धारावाहिक लम्बी कहानी-चार अंतिम

# विस्मृता

## डॉ. स्वर्णसिंह रघुवंशी

गतांक से आगे-

मेज पर खाना सजा हुआ था। हम दोनों एक ही थाली में भोजन करने लगे। खाना खाते समय उषा ने अपनी जिन्दगी के हर उतार-चढ़ाव एवं अपने असफल प्रेम का वह 'जहर' उगल दिया। उसकी बातें सुनकर मेरी पूर्वधारणा अधिक दृढ़ हो गई। मैंने जो सोचा था वह सच निकला और अब पूर्ण विश्वास भी हो गया। उषा बर्तन उठाकर अंदर चली गयी थी। आज इतने समय बाद उषा के साथ खाना खाने से, मुझे हल्की सी झपकी आ गयी-यादों की। बारह वर्ष पूर्व का वह दिन आंखों के आगे घूम गया जब.....

''उषा के जन्मदिन के अवसर पर मैंने उसके घर स्वल्पाहार किया था। उस दिन उषा थोड़ी बेचैन सी दिख रही थी। मेरे कारण पूछने पर उसने मुझे बताया कि वह आज पार्टी में जो नई फ्रॉक पहनने वाली है उससे मेल खाता हुआ रिबिन उसके पास नहीं है तब मैं रिबन खरीदकर ला देने के लिए तैयार हो गया था। उषा के छोटे भाई के साथ मैं बाजार गया और बड़ी मुश्किल से मैच वाला रिबिन ढूंढ पाया, वह भी केवल एक चोटी में बांधने लायक ही था। रिबिन के दाम मैंने स्वयं अपने पास से ही दिये और उसका जिक्र उषा से न करे, यह बात उसके छोटे भाई को बता दी थी। मेरी असमर्थता या गरीबी उस समय उषा को कोई कीमती उपहार भी नहीं दे सकती थी। वह मामूली रिबिन ही उषा के लिए मेरी एक अज्ञात भेंट थी।

उस दिन- समारोह में आने वाले लोगों में केवल मैं ही एक ऐसा था जो खाली हाथ था। इस कारण मैं उन सम्पन्न लोगों में बैठने का संकोच कर रहा था। पर मेरी भावनाओं और हार्दिक प्रेम की वह अज्ञात भेंट उषा के सिर पर सबसे ऊपर कसकर लिपटी थी, जिसे मैं देख रहा था। मैं खुश था कि मेरी वह अज्ञात भेंट उषा का माथा चूम रही थी। तब मुझे ऐसा लगा था जैसे उषा हंसकर मुझे दिली आभार देकर कह रही हो ''देखो, तुम्हारी भेंट सबसे ऊपर और सबसे बहुमूल्य है।''.....

हल्की थपकी से मेरी तंद्रा टूट गई। जैसे ही मैंने आंखें खोली, उषा ने मुस्कराकर कहा- बड़ी जल्दी सो गये....''सोया कहां, खो गया था'' मैंने कहा। 'कहां खो गये थे'....''तुम्हारी सोलहवीं वर्षगांठ की पार्टी में.... आज तुम्हारे साथ खाना खाकर वह याद आ गई।'' 'चलो अच्छा हुआ, मेरी खुशी में एक कड़ी और जुड़ गई।' ''मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा''-कहते हुए मैं उठकर बैठ गया।

''आज भी वही तारीख है, एक संयोग-मेरी अठ्ठाइसवीं वर्षगांठ ..... तभी तो मैंने तुम्हें आज आमंत्रित किया था।'' उषा के शब्द और व्यवहार पर मैं आश्चर्यचकित था। उसने कल यदि मुझे यह बता दिया होता तो आज मैं उसे कोई उपहार- एक याद अवश्य भेंट कर देता। मेरा मन अंदर ही अंदर क्षुब्ध हो उठा। अपने आप पर ग्लानि होने लगी कि उस समय भी मैं उसके जन्मदिन पर खाली हाथ था और आज भी खाली हाथ रहा। मुझे उषा पर गुस्सा आ गया। मैंने नाराज होते हुए कहा- ''यह तो तुमने बुरा किया उषा, कल बताया नहीं कि तुम्हारा आज जन्मदिन है।'' ''यदि बता देती तो आज तुम्हें मेरे जन्मदिन की वह पुरानी याद कैसे आती''-इतना कहकर वह खिलखिलाकर हंस दी। ''फिर भी मैं तुम्हें कोई ऐसा उपहार दे सकता जो हमेशा तुम्हें मेरी याद दिलाता रहता। पर मेरा दुर्भाग्य कि मैं आज भी तुम्हें कोई उपहार न दे सका.... और तब भी नहीं दे सका था मैं''-एक ठण्डी सांस भरकर मैं चुप हो गया। मेरे कहने में थोड़ा भारीपन सा आ गया था।

उषा मेरा आशय समझ गई उसकी आवाज में भी भारीपन था। मेरे चुप होते ही उसने भरे गले से कहा '' मुझे मालूम है सोवरन, तब तुमने मुझे एक मामूली सा रिबिन खरीदा था। बाद में जब मुझे मालूम हुआ तो मेरा दिल तुम्हारे प्रति सहानुभूति से भर गया था, परन्तु मैं तुमसे कह न सकी और आज तुमने मुझे अपनी भावनाओं और आत्मीयता का जो उपहार दिया है वह उसी रिबिन की तरह इतना बहुमूल्य है जो मुझे कभी भी कोई और नहीं दे सकता, इससे बढ़कर और कोई उपहार क्या होगा।'' उषा के विचारों ने मेरे अंदर एक शांति, मन को संतोष प्रदान कर दिया। मेरे अंदर का उद्वेग अब पूर्णतः समाप्त हो गया था और उसकी जगह एक नई प्रसन्नता समा गई। बातें करते-करते हम शयनकक्ष की ओर चले दिये। मैंने ड्राइंग रुम में सोफे पर ही सो जाने की इच्छा व्यक्त की थी किन्तु वह नहीं मानी और मुझे ढकेलते हुए बोली- ''चलो अब सो भी जाओ।'' जैसे समझा रही हो- मुझे तुम पर विश्वास है, मेरे दोस्त।

पलंग एक सा था। हम दोनों उसी पलंग पर लेट गये। मैं चुपचाप एक करवट होकर लेट गया और उषा मेरी वह डायरी खोलकर पढ़ने लगी। बीच-बीच में हल्की सी हूं-हां हमारे मध्य होती रही। मेरा मुंह उषा की तरफ था। एक नारी- उषा के शरीर का हल्का-हल्का स्पर्श मुझे रोमांचित करने लगा। बीच में उषा का बार-बार मेरी ओर देखना, उसकी आंखों में उत्पन्न चमक को देखकर मेरा मन एक अविवाहित- एकाकी स्त्री के घर रात्रि व्यतीत करने की विषमताओं में उलझने लगा और शरीर एक अज्ञात मीठी तपन से धीरे-धीरे तपने लगा। सहसा उषा ने डायरी बंद करके मेरी ओर तेजी से करवट ली और फिर मेरे कंधे को धीरे से दबाते हुए बोली- ''सोवरन! लगता है अब मुझे भी शराब पीना पड़ेगा।''

अचानक उषा के इन वाक्यों को सुनकर मैं हतप्रभ, उसे अवाक् देखता ही रह गया। मेरी मुखमुद्रा को देखकर वह आगे बोली- ''मैं बोतल में बन्द वह मदिरा नहीं बल्कि हृदय में भरी मीठी यादों की वह प्रेम रुपी शराब पीना चाहती हूं....., आज तुम्हारा साथ पाकर, तुम्हारे हृदय के भाव और अगाध प्रेम की वह आत्मीयता पाकर, मैं भी तुम्हारी शराब की पिन्नक में बहक कर तुम्हारी तरह शराबी हो गई हूं।'' मैंने धीरे से पूछा- ''क्या मैं शराबी लगता हूं तुम्हें?'' वह बोली ''नहीं तो मैंने कब कहा? '' ''अभी कहा तो था।'' मेरी बात पर वह जोर से हंसी और हंसते हुए बोली- ''अरे! वह तो मैंने तुम्हारी रचनाएं और तुम्हारे मन के भावों को देखकर कहा था....., आम शराबी की तरह तुम थोड़े ही हो.... तुम तो मात्र-साहित्यिक शराबी हो, जनाब!''

मैं समझ नही पा रहा था कि उषा शराब के गुणे-दोष जान चुकी है या मेरा तर्क, वह विचार उसे भा गया। कुछ भी हो, उसके विचार बदलते दिखाई दे रहे थे, तभी तो वह कह रही थी-''प्रेम की शराब पीने से मन में मधुर नशा भर जाता है, मैं भी उसी नशे में आज बहक जाना चाहती हूं। आज मुझे मालूम पड़ रहा है कि नशा कैसा होता है? हृदय में भरी उस सुरा से, आत्मीयता के प्रेमेन्दु की एक बूंद को पीकर, इंसान क्यों मदमस्त हो जाता है....? सच मानों मैं तुम्हारे हृदय की जूठी शराब की एक बूंद पीना चाहती हूं, क्या तुम मेरा साथ दोगे- सोवरन!'' आज मैं उषा के मन के भावों को और अधिक जगा देना चाहता था, उस दी हुई चिंगारी को भड़काकर बुझी शमा की लौ पुनः प्रज्वलित कर देना चाहता था। मैंने कहा- ''लगता है तुम भी दार्शनिकता में बहने लगीं।'' -मात्र इतना कहकर मैं चुप हो गया। मेरा संक्षिप्त उत्तर सुनकर वह कह उठी-'' सोवरन! मैं नारी हूं, अकेली हूं। अब मुझे भी सहारे की आवश्यकता है, मुझे एक सम्बल चाहिए। आज तुम्हारे कारण, तुम्हारे संसर्ग ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया..... आज मेरा सूनापन, वर्षो से बंद इन होंठों की हंसी, फिर से अंकुरित हो कहकहों में फूट पड़ी है..... यदि तुम शारीरिक सम्बल नहीं दे सकते तो कम से कम मुझे मन से तो सहारा दे ही सकते हो। मन का सहारा, तन के सहारे से उत्तम और चिरस्थाई होता है....'' मैं चुपचाप उस सूखे दरिये को पुनः उमड़ता देख रहा था। ''बोलो सोवरन! क्या तुम अपने जीवन की वह अमूल्य निधि- हृदय के अथाह सागर में से एक बूंद-एक प्रेम मुझे दे सकोगे.....? मैं तुम्हारी आत्मीयता से, अमृत के समान वह बूंद पाकर, तुम्हारे प्रेम की शराब का एक घूंट पीकर, मदमस्त हो जाऊंगी और जीवन भर उस नशे से तुम्हारी यादों से, अपने आपको अमर कर लूंगी।''

उसके इस आशातीत परिवर्तन से मैं स्तब्ध रह गया। क्षण भर के लिये मेरा मस्तिष्क कुंद हो गया। उषा की बातें सुनकर ''डिप्लोमेट'' का नशा कपूर की तरह उड़ गया। मैं टेबिल पर रखे उस ''क्वार्टर'' को देख रहा था। उसे देखकर मुझे ऐसा लगा मानों आज उसकी सम्पूर्ण मात्रा उषा के हृदय में उड़ेल दी गई हो और वह मेरी तरह टेबिल पर खाली पड़ा हो। उषा मेरे सीने पर झुकी थी। सुगंधित लटों का स्पर्श मेरे हृदय में उसकी सुगंधता के साथ-साथ उषा की मधुर, हार्दिक भावनाओं को भी भरता चला गया। उन बिखरे काले केशों के बीच सुंदर चांद जैसा मुखड़ा और हिरणी की तरह चमकती आंखों को देखकर मैं भावनाओं में बहक गया। उषा मेरी बगल में पलटकर चित्त लेट गई। मैंने दोनों हाथों को मोड़कर सिर के नीचे रख लिया। उषा चुप थी, पर मेरा दिल अपनी बात कहने के लिए उत्सुक हो उठा। उषा के नशीले शब्दों ने मेरे विचारों को हवा दे दी थी, इस कारण मैं बोल पड़ा- ''उषा! यदि तुम अपने जीवन में जब कभी अकेलापन महसूस करो या अवसादों में घिरकर अपने आपको असहाय समझने लगो, तब तुम मुझे याद कर लेना। मैं उसी क्षण तुम्हारे पास आ जाऊंगा। विश्वास न हो तो अपने दिल से पूछना- वह तुम्हें सब कुछ याद दिला देगा, जब कभी भी कष्ट के समय और दुखों में तुम बेहोशे होने लगो तब मेरी उसी शराब को यादकर पी लेना। वह तुम्हें तनावों और कुंठाओं से मुक्त कर देगी। यदि समय ने साथ दिया और वक्त मिला तो मैं तुम्हारे पास हमेशा आता रहूंगा। मेरा वह आगमन चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म- मेरी यादें तुम तक सदैव पहुंचती ही रहेंगी।''

मैं थोड़ा सा बीच में रुका और फिर आगे कहने लगा- ''मेरे मन में तुम एक 'विस्मृता' थीं। मैं तुम्हें हमेशा याद करता रहा पर तुम ही मुझे भूल गईं, तुमने मुझे बिसरा दिया। मेरे मानस पटल पर तुम्हारी स्मृति, धुंधली पर स्थिर बनी हुई थी, पर अब तो वह परत मेरे मिलन, इस घटना से टूट चुकी है.....तुम्हारी उस भूली याद में मैं अब ऊपर आ गया हूं। तुम्हारी आंखों की धुंध अब मन के भावों से मिट चुकी है, उसे मैं भली प्रकार देख रहा हूं। पर, डर लगता है कि कहीं कोई तूफान न आ जाए जो मुझे झंझावातों के बीच फंसाकर न रख दे।'' उषा प्रश्न भरी नजरों से मुंह ताकने लगी। मैं कह रहा था-''सच मानो उषा! कहीं ऐसा न हो कि तुम मुझे याद करती रहो और मैं ही तुम्हें भूल बैठूं। यदि कर्तव्यों की कोईबहुत बड़ी विवशता न हुई तो विश्वास रखना, जब भी तुम्हारी याद मुझ तक पहुंचेगी मैं दौड़कर तुम्हारे पास आ जाऊंगा..... यदि बांहों से सहारा न दे सका तो मेरी आत्मा का सहारा तुम्हें अवश्य ही मिल जायेगा। जिस दिन भी तुम्हें मेरे सहारे की आवश्यकता होगी, तुम्हें सहारा दूंगा, मैं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा.... हो सकता है तुम्हारे लड़खड़ाते कदम मेरा वैचारिक सम्बल पाकर तुम्हें सम्हाल दें और असीम खुशियां तुम्हारी सूनी गोद भर दें और फिर तुम वही पुरानी उषा दिखने लगो।- प्रातःकाल वाली उसी उषा की तरह चमकती-दमकती सी।''

मेरी बातों से उषा की पलकें भीग उठीं। हम एक दूसरे को धड़कते दिल से देख रहे थे। पर मन शांत था-शायद आत्मिक प्रेम के प्रगाढ़ बंधन में बंधकर। उषा की चमकती-छलकती आंखों को मैं देख रहा था। उन हिरणी जैसी बड़ी-बड़ी आंखों को देखकर क्षण भर के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे वह उषा न होकर कोई कामोन्मुक्त मादा चीतल हो, जो एकान्त घनघोर जंगल में खड़ी होकर, चिल्ला-चिल्लाकर, अपने नर चीतल को सहवास के लिए आमंत्रित कर रही हो। हमारे ऊपर एक अज्ञात नशा छाने लगा। हमने एक दूसरे को आज प्रेम की पवित्र शराब जो पिला दी थी, उसी के नशे में हम

बहक उठे। हमारी बाहों ने एक दूसरे को अपने बंधन में बांध लिया। धीरे-धीरे आत्मा का वह बंधन कसता गया और फिर हम निद्रा के आगोश में समाते चले गये।

''गुड मार्निंग!'' सुबह होने पर उषा मुझे जगा रही थी। आज उसकी जिंदगी के नये प्रभात का उदय हो गया था, रात की चंचल आंखें शान्त थीं, पर उसमें वह चमक अब भी शेष थी- सुबह की लालिमा जैसी। मुझे अब वापिस लौटना था। मैंने अपनी सारी बिखरी हुई यादें बटोर कर समेट लीं। डायरी को बैग में रखकर मैं उठ दिया। उषा भी मेरे साथ-साथ बाहरी बरांडे तक आ गई। मुझे जाता देख वह उदास हो गई थी। शायद मेरा बिछोह उसे खल रहा था। प्रियजन का बिछोह में- मिलन के बाद बिछोह के क्षण कितने दुखदायी हो जाते हैं, हृदय मे कितना कष्ट होता है, वह भुक्तभोगी ही समझ सकता है। पर मिलन की खुशी और बिछोह का कष्ट सहना ही पड़ता है। बिछोह की घड़ी में मेरा मन भी भारी हो गया था। जैसे ही मैंने अंतिम विदा ली, उषा एकदम मेरे सीने से लिपट गई और बोली-''तुम आज ही चले जाओगे, सोवरन।'' ''हां उषा! जाना ही होगा.....संध्या का समय जो हो गया।'' मैं उतना ही बोल पाया। ''फिर कब आओगे?'' ''जब तुम याद करोगी।'' शायद वह भावव्हिवल हो उठी थी या मेरा बिछोह उसे मजबूर कर गया। जैसे ही मैं चलने को हुआ, उषा ने मेरा कसकर हाथ पकड़ लिया और बोली- ''मैं अभी तक तुम्हारे लिए विस्मृता थी, पर अब तो 'स्मृता' बन चुकी हूं, हर सांस में तुम्हारी याद समा गई है। कहीं, अब तुम मुझे बिसरा न देना, नहीं तो मैं फिर से वही विस्मृता बन जाऊंगी, उषा से पुनः वही संध्या जैसी बन जाऊंगी.....सोवरन!....., मुझे तुम्हारे सम्बल की आवश्यकता है। मुझे सहारा देना, यहां से चले जाने, पर भूल मत जाना मुझे।''

एक दूसरे की विदाई का अंतिम क्षण- भारी मन से मौन स्थिर नेत्रों ने पूर्ण किया। मैं चुपचाप सीढ़ियां उतर कर आगे बढ़ दिया। कुछ ही कदम भरे थे कि मेरा मन पलट गया। उषा चुपचाप, दोनों हाथों से किबाड़ों की चौखट पकड़े दरवाजे के बीचोंबीच खड़ी होकर उदास मन से मुझे जाता देख रही थी। उसे देखकर ऐसा लगा, मानों प्यारी हिरणी प्यास बुझ जाने के पश्चात् परम शांति में बचे हुए जल की ओर स्थिर दृष्टि से निहार रही हो। मैं पलटा और आगे बढ़ता चला गया। शनैः-शनैः मेरे पदचापों की ध्वनि उषा से दूर, बहुत दूर होती चली गई और उसी के साथ एक स्वर, धीरे-धीरे मेरे करीब आता गया जैसे मेरा पीछा कर रही हो-उषा की स्वर-प्रतिध्वनि।

तभी- नयन सम्पुट में बंद वह सुखद स्वप्न समाप्त हो गया। मैं जाग चुका था। ठीक मेरे पीछे वाली सीट पर बैठा यात्री ट्रांजिस्टर बजा रहा था। अचानक नींद के टूट जाने से आंखों में भारीपन भर गया। बोझल आंखों में अधूरे स्वप्न की वे स्मृतियां, उषा के साथ व्यतीत एक रात के सहवास के वे अज्ञात क्षणों की यादें, बेहोश होने से पूर्व उषा की वे चमकती आंखें, होश आने पर अभी भी मेरी आंखों के सामने चमक उठती थी। स्वप्न में उषा के साथ व्यतीत उन ज्ञात-अज्ञात क्षणों का स्मरण कर मैं रोमांचित हो उठा। तेज मोड़ पर बस के मुड़ते ही मेरी स्मृति- वे सब कल्पनाएं भी मुड़कर एक तेज झटके के साथ बिखर गयीं। बस गंतव्य पर पहुंचकर खड़ी हो गयी थी। मैं अपनी पुरानी जगह नादन आ चुका था। सामने सड़क पर मेरे मित्र तिवारी और डॉ. परिहार खड़े थे। जैसे ही मैंने बस से नीचे उतर कर कदम रखा, मुझे देखते ही वे दोनों चिल्लाकर बोले ''वाह रे'' रघु''.... और फिर मेरी वह शेष धुंधली स्मृति-कल्पना दिन के उजाले में फैलकर पूर्णतः विलीन होती चली गई।

-सम्पर्क- 9425759089, ई-36/141, पेन्शनर्स मोहल्ला कैन्ट, गुना।

## किस निर्मम पर तू रोता है

सपना सपना ही होता है
उनमें दिखता अपनापन है।
यह सब तेरा पागलपन है।
तू है श्रम की दोपहरी है,
खून पसीने का सावन है।
गलती तेरी है, चन्दा को
तूने सावन में न्यौता है।
किस उदारता पर तू फूला,
अपना अदनापन क्यों भूला?
स्वप्न-डाल पर आंसू-डोरी
बांध रहा क्यों रिमझिम-झूला?
नाहक बिजली से उलझाकर,
भ्रम का मीठापन खोता है।
सपने यदि पूरे हो जाते-
तो वे क्यों सपने कहलाते
अच्छा होता बिन टूटे ही,
तेरे भ्रम तुझको बहलाते।
पर जग को मालूम न होगा,
तेरा सपना इकलौता है।
अच्छा था विश्वास न करता,
करता भी तो डरता-डरता'
धूल पहाड़ बना करती है,
फूंक-फूंक कर ही पग धरता।
अपनी गलती के पर्वत को,
अब क्यों आंसू से धोता है?

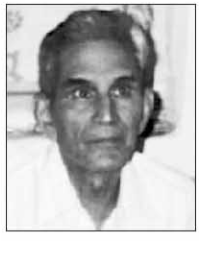

- डॉ. देवकीनंदन जोशी
मो. 8720031001, फोन-0755-2557428

कहानी

# स्मार्टफोन

सोनाली करमकर, नागपुर

बेटे की ऊलजुलूल मांग से शर्मा साहब परेशान हो गए थे। बेटे की मांग स्मार्टफोन की थी और शर्माजी का उसकी मांग पर विरोध था। उनका कहना था देखो बेटे मोबाइल का उपयोग केवल फोन करने के लिए ही होना चाहिए जो तुम्हारे पास है। बाकी के कामों के लिए हर चीज का उपकरण मौजूद है तो उसका उपयोग करो। बेटा बोला, परन्तु पापा! सुनिए तो उसमें इंटरनेट है। हम जहां चाहे गाने भी सुन सकते हैं, जहां चाहो जब चाहो फोटो ले सकते हो। मैं अब कालेज जाऊंगा तो मेरे प्रोजेक्ट के कामों में भी मोबाइल काम आयेगा। प्लीज पापा मेरे सभी दोस्तों के पास है, मुझे भी दिला दीजिये ना।

पापा और बेटे की तू-तू, मैं-मैं चलती रही। आखिर आठ दिन बाद बेटे की जिद और उसकी मनुहार से वह हार गए और उन्होंने बेटे को मोबाइल लेकर दे दिया। अब बेटा रोनित सदा मोबाइल में उलझा रहता। इंटरनेट पर कुछ न कुछ पढ़ता रहता या फोटो खींचता रहता। बाहर जाते वक्त गले में हेडफोन डालकर ही निकलता। कभी मां नाराज होती तो कभी पापा डांटते। लेकिन रोनित हर बार बात को नजरअंदाज कर देता। कालेज शुरु होने में अभी वक्त था। इसलिए रोनित ने पापा के पीछे कहीं घूमने जाने की जिद लगाई। पापा चलिए ना, कहीं बाहर घूमने का प्लान करते हैं। फिर अगले साल मेरे बारहवीं की ट्यूशन शुरु हो जाएगी। पापा बोले, ठीक है! चलते हैं परन्तु कहीं आसपास ही दो-तीन दिन के लिए चलते हैं। मंजूर है? रोनित बोला मंजूर है पापा! बिलकुल मंजूर है। रोनित चहकते हुए बोला। अगले दो दिन बाद पचमढ़ी जाना तय हुआ।

सुनो नीता, तुम तैयारी कर लो। मैं बैंक से पैसे लेकर आता हूं। शर्माजी पत्नी से बोले। पापा मैं भी चलूं? रोनित ने पूछा। हां-हां चलो पर समय लगेगा, तुम उकता तो नहीं जाओगे? 'नहीं पापा! मेरा मोबाइल है न साथ में। मैं गाने सुन लूंगा कहते हुए रोनित बाइक पर पापा के पीछे सवार हो गया। जब दोनों बैंक पहुंचे तो वहां हमेशा की तरह लम्बी कतार थी। शर्माजी लाइन में लग गए और रोनित पास ही पड़े सोफे पर बैठकर गाना सुनने। लगभग बीस-पच्चीस मिनट बाद शर्माजी दूसरे नम्बर तक पहुंचे, तभी अचानक बैंक में हडकम्प मचा। चार नकाबपोश हाथ में गन लिए डाका डालने के इरादे से बैंक में दाखिल हुए।

''जो जहां है वो वहीं हाथ ऊपर करके खड़ा हो जाए और खबरदार किसी ने मोबाइल को हाथ लगाया तो।'' एक नकाबपोश चिल्लाया। मौके का फायदा उठाये रोनित सोफे के पीछे छिप गया। सोफा वैसे ही एक किनारे था सो नकाबपोश की नजरों से परे था। वहां तक नजर पहुंचाने की उन्हें जरुरत महसूस नहीं हुई क्योंकि सोफा खाली पड़ा था। उन नकाबपोशों ने गन का डर दिखाकर सारे लोगों को हाथ ऊपर किए एक बाजू में सरका दिया। कैश काउंटर से बाहर का रास्ता खाली करवा दिया ताकि भागने में आसानी हो। सोफे के पीछे छिपा रोनित, इस स्थिति से कैसे उबरा जाए ये सोच रहा था। उसने मोबाइल वायब्रेशन मोड पर डाल दिया। हेडफोन कान में लगाये और 100 नम्बर डायल किया। सामने से हेलो का स्वर सुनाई देते ही रोनित ने फुसफुसाहट भरे शब्दों में कहा, ''हम लोग बैंक में फंस गए हैं, यहां डाका पड़ा है, हमें बचाइए।'' उसका स्वर सुनते ही इंस्पेक्टर सुरेश सकते में आ गए। कुछ पूछना चाहा तो फोन बंद हो गया। इंस्पेक्टर सुरेश ने तुरन्त कंट्रोल रुम से वह नम्बर लिया और उस पर मेसेज किया, बेटा डरो नहीं। बैंक का पता मेसेज करो, हम 10 मिनट में पहुंचते हैं।

रोनित ने हिम्मत तो दिखाई परंतु था तो 15 साल का बच्चा ही। मेसेज टाइप करते वक्त उसकी उंगलियों में थरथराहट थी। पता वह ठीक से टाइप नहीं कर पा रहा था। आखिरकार उसने अपने मोबाइल का लोकेशन और जीपीआरएस दोनों ऑन कर दिया। पुलिस उसके नम्बर पर नजर रखे हुए थी। रोनित ने जैसे ही लोकेशन ऑन किया वहां पुलिस ने उसकी लोकेशन पकड़ ली। जगह पता लगने पर पुलिस ने बैंक के सबसे पास वाले पुलिस स्टेशन को सूचना कर दी। इंस्पेक्टर सुरेश भी अपनी टीम के साथ तुरंत निकल पड़े। बैंक का माहौल काफी खौफनाक था। नकाबपोशों ने सबको काबू में कर रखा था। एक बड़ा सा बैग उन्होंने कैशियर को थमाया और सारी रकम उसमें भरने को कहा। जब तक कैशियर बैग भरने में लगा रहा था तीन नकाबपोश बैंक में मौजूद लोगों पर गन ताने उन्हें खूंखार नजरों से घूर रहे थे। लोगों पर एक-एक मिनट भारी पड़ रहा था। लगभग 15 मिनट से ज्यादा समय गुजर चुका था। ''अबे ओय कैशियर, जरा

जल्दी हाथ चला, वरना इस कटर से तेरे हाथों पर मेंहदी गुदवा दूंगा'' नकाबपोश ने उसे धमकाया। डरा सहमा कैशियर पैसे भरने लगा।

अभी पांच मिनट ही गुजरे होंगे कि बाहर पुलिस की जीप का सायरन सुनाई दिया। पुलिस सायरन की आवाज? पुलिस यहां तो नही आयेगी? एक नकाबपोश फुसफुसाया। ''नहीं! पुलिस को क्या सपना आया होगा कि तू यहां डाका डालने आया है? चुपचाप खड़ा रहे, दूसरे ने तल्ख स्वर में कहा। ''लेकिन सुनो, हमें जो माल हाथ लगे उसे लेकर खिसकना होगा। गलती से सही मगर पुलिस यहां आयी तो हम फंस सकते हैं। तुम बैग लेकर आओ जल्दी।'' तीसरे नकाबपोश ने इशारा किया। वह स्थिति संभाले अपने साथ के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था, बाकी दोनों नकाबपोश कैशियर से बैग लेकर मुड़े ही थे कि अचानक बैंक के बाहर दो पुलिस जीप दनदनाती हुई पहुंची। रुकती हुई जीप से इंस्पेक्टर सुरेश कूदकर अंदर की ओर भागे। पीछे उनके साथी भी थे। अंदर के दोनों नकाबपोश भागने के इरादे से दरवाजे तक पहुंचे ही थे कि पुलिस ने झपटकर उन दोनों को पकड़ लिया। कैशियर से बैग लेकर बाकी दो नकाबपोश पीछे की तरफ भागे, लेकिन तब तक बैंक पुलिस से घिर चुकाथा। पिछले दरवाजे पर पुलिस ने उन्हें भी पकड़ लिया। लोगों ने चैन की सांस ली। पुलिस ने जैसे ही उन चारों के नकाब निकाले, लोग हैरत से देखने लगे। वो चारों 20-21 साल के कालेज स्टूडेंट थे। पुलिस को देख रोनित सोफे के पीछे से बाहर आ गया। उसे वहां से निकलता देख इंस्पेक्टर सुरेश समझ गए कि जरुर इस लड़के ने ही फोन किया होगा। इंस्पेक्टर सुरेश ने उसे पास बुलाया। ''नहीं-नहीं सर! ये मेरा बेटा है जो मेरे साथ बैंक आया है। उन नकाबपोशों से इसका कोई वास्ता नहीं है'' शर्माजी तेजी से आगे आते हुए बोले। 'अरे नहीं-नहीं साहब! घबराइए नहीं। आपका बेटा बड़ा ही होशियार है! आज आप सबको इसने बचाया है, कहकर इंस्पेक्टर सुरेश ने सारी बात बताई। एक स्मार्टफोन की सहायता से रोनित ने ये किया है और यह सुनकर शर्माजी हैरत में पड़ गए। रोनित को उन्होंने गले से लगाया। ''बेटा मुझे लगता था स्मार्टफोन यानी फिजूलखर्ची...उसका उपयोग इस तरह भी किया जा सकता है ये मुझे पता नहीं था। बहुत अच्छा हुआ जो मैंने तुम्हें स्मार्टफोन दिलाया।''

हां साहब, ये है हमारे देश के होशियार नौजवान! हम लोग बच्चों को मोबाइल के नाम पर कोसते हैं पर हमसे ज्यादा मोबाइल के बारे में इन्हें जानकारी होती है और वह कहां उपयोग में लाना है ये बच्चेअच्छी तरह जानते भी हैं, इंस्पेक्टर सुरेश ने रोनित की पीठ थपथपाते हुए कहा। पुलिस उन चारों नकाबपोशों को लेकर चली गयी। लोग अब तक संभल चुके थे। 'चलो बेटे घर चलते हैं। पैसे लेने कल आयेंगे, आज मन नहीं है और हां, तुम बारहवीं में जब अच्छे नम्बर लाओगे तो मैं तुम्हें इससे भी अच्छा स्मार्टफोन लेकर दूंगा! बाहर का रुख करके शर्माजी रोनित को कह रहे थे।

---

**अभिमत**

# अभिशाप है मृत्युभोज

## चन्द्रेश रघुवंशी

तेरहवीं के दिन क्षणिक जिव्हा स्वाद की लालसा में अंधविश्वास और परम्पराओं के नाम पर मृत्युभोज के रुप में कर्जदार बनाकर आश्रित सदस्यों को दर-दर की ठोकरें खाने को कई बार मजबूर होना पड़ता है। वास्तव में मृत्युभोज पुरातन परम्परा के नाम पर सामाजिक अभिशाप है। हमें इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिए कि किसी परिवार का सदस्य जिस पर घर की समस्त जिम्मेदारी थी और अचानक दुर्भाग्यवश उसका असामयिक निधन हो जाए तब ऐसी दुखद व विपरीत परिस्थितियों में रघुवंशी समाज की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि उसके परिवार को सम्बल दें न कि मृत्युभोज के रुप में कर्जदार बना दें। शिक्षित व बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा इसका समाज के अंदर पुरजोर विरोध और बहिष्कार करने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए ताकि अनावश्यक रुप से किसी दुखी परिवार को और परेशानियों का सामना न करना पड़े। इसके साथ ही जो मृत्युभोज देना चाहते हैं उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि वे इसमें व्यय होने वाली राशि किसी गरीब व मजदूर वर्ग के बच्चों के विवाह, शिक्षा, गौशाला, धर्मशाला निर्माण आदि पर व्यय करें। किसी बीमार व्यक्ति के इलाज पर भी राशि व्यय करने की परिपाटी कायम कर सकते हैं जो कि समाज और भावी पीढ़ी को एक नई दिशा प्रदान कर सकती है, यह समय की मांग है और यही सार्थक दान है।

-आरोन, गुना, म.प्र.,
मोबाइल-9669951423

# मध्यप्रदेश में आदि शंकराचार्य का स्मरण: एक स्तुत्य प्रयास

भोपाल। आदि शंकराचार्य का भारत भूमि पर अवतरण उस समय हुआ जब देश में कोई चक्रवर्ती राजा नहीं था , बस उसका आदर्श ही शेष रह गया था। एक अराजकता की स्थिति थी। प्राचीन स्मृतियों और पुराणों का युग बीत चुका था। उदारवादी और कट्टर प्रवृत्तियों में टकराहट भी सुनायी पड़ने लगी थीं। धर्म के क्षेत्र में तन्त्र- मन्त्र और प्रतिमा पूजन की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही थी। पुराने वैदिक देवताओं को नया रूप दिया जा रहा था और साथ ही बौद्धों के अनेक सम्प्रदाय भी प्रचलन में आ गए थे। वह समय वेद को प्रमाण को मानने वाली आस्तिक और उसे न मानने वाली नास्तिक धाराओं के संघर्ष का युग भी कहा जाता है। शंकराचार्य इसी संक्रांति काल में भारत में अवतरित हुए। उन्होंने अपने प्रखर ज्ञान और साधना के बल से तत्कालीन भारतीय समाज में धर्म के ह्रास को रोकने के लिए अनेक नास्तिक सम्प्रदायों का सामना कर वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा में अपना जीवन समर्पित किया। वे मात्र बत्तीस साल ही जिए पर भारत में उन्होंने अपनी प्रखर चेतना शक्ति से जिस अव्दैत सिध्दांत की प्रतिष्ठा की , उससे समस्त मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हुआ। आदि शंकराचार्य ने अपने भाष्यों के व्दारा वेदान्त की पुनः प्रतिष्ठा करते हुए शास्त्रार्थ के माध्यम से विपक्षी सम्प्रदायों को सिर्फ पराजित ही नहीं किया बल्कि प्राचीन धार्मिक क्षेत्रों को नवजीवन प्रदान करते हुए उपासना-सम्प्रदायों में सुधार भी किया।

## मध्यप्रदेश भी आए थे आदि गुरू

तमाम ऐतिहासिक विवादों के बावजूद मध्यप्रदेश को यह गौरव हासिल है कि भारत की राष्ट्रीय एकता के देवदूत आदि शंकराचार्य यात्रा करते हुए नर्मदा और माहिष्मति नदियों के संगम पर आए थे। उनसे संबंधित ओंकारेश्वर, उज्जैन, पचमठा (रीवा) और अमरकंटक आज के मध्यप्रदेश में अवस्थित है। आदि शंकराचार्य के गुरु श्री गोविंदपाद का आश्रम ओंकारेश्वर के तट पर ही था और उनकी प्राचीन गुफा आज भी वहाँ मौजूद है जहाँ लाखों श्रध्दालु उसके दर्शन करके अपने आपको धन्य मानते हैं। पास ही महेश्वर नगरी में निवास करने वाले आचार्य मण्डन मिश्र से शंकराचार्य के शास्त्रार्थ की लोक प्रसिध्द कथा आज भी भुलायी नहीं जा सकी है। जिसका निचोड़ यह है कि कर्मयोग के व्दारा अनासक्त भाव से मानव कल्याण के लिए अपना अपना कर्तव्य विधिवत पालन करने की शक्ति मिलती है। उसी शक्ति के व्दारा जीव, जगत और ब्रह्म की एकता समझ में आती है। प्रत्येक मनुष्य और समस्त जड़- चेतन में एक ही सत्ता विद्यमान है। सबको एक ही चैतन्य शक्ति बिना किसी भेद-भाव के चेतना प्रदान कर रही है। इसी अव्दैत भाव में जीवन जीते रहने से मानव कल्याण की राह प्रशस्त होती है। मानव समाज जड़ पदार्थ नहीं है,अपितु जीवित प्राणियों का समूह है। मनुष्य की अपनी स्वतंत्र इच्छा शक्ति है जिसके व्दारा वह व्यक्ति और समाज की उन्नति का मार्ग निकालता है।

## सांस्कृतिक वीणा के तारों को कसा

भारत की सांस्कृतिक वीणा के ढीले पड़ गये तारों को शंकराचार्य ने एक कठिन समय में फिर मिलाकर दिखाया जिससे भारत अपने सनातन जीवन संगीत को फिर सुनकर आनंद विभोर हो सके। शंकराचार्य ने पूरे भारत की यात्रा करके अपने शास्त्रार्थों के माध्यम से एक गहन संवाद का मार्ग चुना क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि किसी को पराजित नहीं करना है बल्कि उस सत्य से उसका फिर सामना करा देना है जिसे वह भूल गया है और जिसके बिना मानव जाति का काम चल ही नहीं सकता। पूरब का जगन्नाथपुरी स्थित गोवर्धन मठ, पश्चिम में शारदा मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ और उत्तर में ज्योतिर्मठ शंकराचार्य व्दारा स्थापित भारत के ज्ञान-संवाद पीठ ही तो हैं जो अपने आत्मकल्याण के लिए प्रयत्न करने वाले प्रत्येक मनुष्य को सदियों से अपने पास बुला रहे हैं।

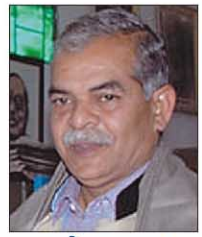

सुरेश गुप्ता

## मप्र सरकार का आदि शंकराचार्य स्मरण

मध्यप्रदेश सरकार आदि शंकराचार्य के अप्रतिम दर्शन और जीवन के पावन स्मरण स्वरूप 19 दिसम्बर एवं 22 जनवरी 18 के दौरान एकात्म यात्रा का आयोजन कर रही है। यात्रा का उद्देश्य अद्वैत वेदांत दर्शन में प्रतिपादित जीव, जगत एवं जगदीश के एकात्म बोध के प्रति जन-जागरण, आदि गुरू के अतुलनीय योगदान के बारे में जन-जागरण तथा ओंकारेश्वर में शंकराचार्य की प्रतिमा की स्थापना के लिये धातु संग्रहण और ओंकारेश्वर को विश्व स्तरीय वेदांत दर्शन केन्द्र के रूप में विकसित करना है। पैंतीस दिवसीय इस यात्रा में 140 जन-संवाद होंगे।

## ओंकारेश्वर में होगी एकाग्र

यह एकात्म यात्रा आदि गुरू शंकराचार्य से संबंधित प्रदेश के चार स्थानों ओंकारेश्वर, उज्जैन, पचमठा (रीवा) एवं अमरकंटक से प्रारंभ होकर 22 जनवरी को ओंकारेश्वर में एकाग्र होगी। प्रदेश के सभी 51 जिले इन यात्राओं में से किसी एक के द्वारा लाभान्वित होंगे। पैंतीस दिवसीय इस यात्रा में प्रतिदिन आदि शंकराचार्य के जीवन और कृतित्व पर एक कार्यक्रम होगा और अष्टधातु की प्रतिमा निर्माण के लिये समाज के सभी वर्गों से प्रतीक स्वरूप धातु संग्रहण किया जाएगा। ग्रहीत धातु से ओंकारेश्वर में 108 फीट ऊँची आदि गुरू शंकराचार्य की विशाल धातु प्रतिमा स्थापित की जाएगी, जिसका भूमि-पूजन 23 जनवरी 2018 को होगा।

इसके पहले इसी साल 9 फरवरी को ओंकारेश्वर में राज्य शासन ने एक आयोजन के जरिये आदि शंकराचार्य का पावन स्मरण किया था। आदि शंकराचार्य का प्रकटोत्सव एक मई 2017 को प्रदेश के सभी जिलों में किया जाकर उनके अप्रतिम अवदानों का स्मरण किया गया। डॉ. श्याम सिंह शशि के अनुसार महापुरुष किसी युग में पैदा होकर भी उसी युग तक सीमित नहीं रहते। अपने मंगलकारी और लोकहितकारी रूप के कारण वे प्रत्येक युग की निधि बन जाते हैं। आदि शंकराचार्य इस निधि की वह जाज्वल्यमान मणि है जिनका भारतीय दर्शन तथा संस्कृति में विशिष्ट स्थान है। वे जिस युग में उत्पन्न हुए थे, उस समय देशी-विदेशी प्रभावों के दबाव में भारतीय संस्कृति संकट के उस दौर में पहुँच चुकी थी, जहाँ से उसका विघटन दूर नहीं रह गया था। ऐसे विकट समय में 'किं स्मर्तव्यं हरेर्नाम सदा, न यामिनी भाषा' के रूप में उन्होंने भयाक्रांत और दुखी जनता को अमोघ मंत्र के रूप में एक अचूक शस्त्र प्रदान किया और इस प्रकार वे चारों ओर छा रही काली घटाओं में आध्यात्मिक शक्ति और संगठन-युक्ति के प्रकाश पुंज की तरह उभरे। यह उसी का परिणाम था कि देश अगले चार सौ वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं का सामना कर सका।

(लेखक अपर संचालक जनसंपर्क है )

# विवाह योग्य युवक-युवती

Name: **Raj Singh Thakur**, DOB: 12-7-1990, TOB: 3.15 Morning, POB: Indore, Hight: 5ft 10inch, Gotra: Kand and Khadia, Qualification: M.com First Division, From-DAVV University Indore. Diploma in Home Loan Advising From Indian Institute of Banking and Finance, Mumbai, Occupation: Branch Credit Manager in AADHAR, Housing Finance-A Dewan Housing Finance Group Company, Fathers Name: Eng. Mahendra Singh Thakur, Retired General Manager From Multi National Company, Consultant for Industrial Automatian, Mother: House Wife, Elder Brother and Sister: Married and well Placed in Jobs, Cont.: Mob.9827317216 and Phone-0731-2422359, Email : msthakur.indore@gmail.com.

Name: **Vinay Raghuwanshi**, DOB: 12-01-1988, Hight: 6Ft, Gotra: Karuda, Qualificataion: B.E. Electronics & Communication and MBA Marketing & Finance From TIT, Bhopal, Job Profile: Director- Red Bridge Infra Pvt, Limited, MP Nagar Zone-1 Vijay Stambh, Bhopal, Salary: 25 Lakh Per year, Father: Mr. D.C. Thakur (Raghuwanshi), Retiered Engineer PHE Department, Mother: Mrs. Anita Raghuwanshi, House Wife, Contact: A-16, Shakshi Paradise Near Hotel Abhinav, Hoshangabad Road, Bhopal, Cell No.: 8839138796, 9752971086, 9560432808.

Name: **Arun Thakur**, DOB: 22nd October 1986, Place of Birth & Time: Dhar, MP, Evening 9-40 pm, Gotra: Mathneriya, Education: B.E. Mechanical from K.J. Somaiya College of Engineering (Mumbai University), MBA in Operations from Great Lakes Institute of Management, Chennai, Occupation: Working as a Senior Consultant at Ernst & Young LLP based out of Bangalore, Fathers Name & Occupation: Bharat singh Thakur, Lawyer at Kalyan Civil & Criminal Court, Mothers Name: Savitri Thakur, Sisters Details: Preety Thukur, She is married to Sh. Kunal Singh Raghuwanshi and both of them are settled in London. Looking for a well qualified girl willing to work after marriage, Contact: 9962470550. Email : 4arunthakur@gmail.com.

Name : **Sachin Raghuwanshi**, DOB : 13/07/1990, Birth Time : 10.18 AM, Birth Place : Chhindwara, Mama Gotra : Badkur, Alma Mater : Kendriya Vidyalaya, Nagpur (School), Kavikulguru Institute of Technology & Science, Nagpur (Graduation), Height : 167.64 cm, Weight : 62 kg, Complexion : Wheatish, Gotra, Dingad, Occupation : Working with IBM India Pvt. Ltd. as Advisory Systems Analyst, Banglore, Address : Qtr. No. C-3, WCL Officers Colony, Near WCL Post SAONER, NAGPUR-441107, Family - Father : NARAYAN SINGH VERMA (Sub. Area Engineer, COAL INDIA LIMITED (Nagpur), Mother : Seema Verma (Home Maker), Sister : Sonika Raghuwanshi (Pursuing Mechanical Engineering at Cummins College, Pune), Contact No. : 9421746136, 09270123526, 8275970793.

# विवाह योग्य युवक-युवती

नाम- प्रियंका रघुवंशी, जन्मतिथि 08 अप्रैल 1985 समय 7.15 सुबह जन्मस्थान-जबलपुर, कद- 5 फीट 4 इंच रंग-गोरा, शिक्षा-एम.फार्मा, फार्मा कम्पनी (माइलेन) अहमदाबाद में कार्यरत, पिता-जे.पी. रघुवंशी सिविल इंजीनियर, गोत्र-कान्द, मामा गोत्र-गहोरिया, माता-सुधा रघुवंशी गृहिणी, भाई-राहुल रघुवंशी एम.टेक, पुणे टीसीएस में कार्यरत, छोटा भाई-रोहित सिंह रघुवंशी, पीडीएस, एमबीए (एचआर) जयपुर, पता-भगवान परिसर, फ्लैट नं. 201, ब्लाक-ए द्वितीय तल, बगली रोड, मिसरोद, भोपाल-462047 मोबा.9893737231.

नाम- राहुल रघुवंशी, जन्मतिथि 13 अगस्त 1987, रंग-गोरा, स्वस्थ सुंदर, शिक्षा एम.टेक, टीसीएस पुणे में कार्यरत, पिता-जे.पी. रघुवंशी रिटायर्ड सिविल इंजी. गोत्र-कांद, मामा गोत्र-गहोरिया, माता-सुधा रघुवंशी गृहिणी, बहन- प्रियंका रघुवंशी एम.फार्मा, फार्मा कंपनी (माइलेन) अहमदाबाद में कार्यरत, छोटा भाई रोहित सिंह रघुवंशी बीडीएस पीपुल्स कालेज भोपाल, एमबीए, एचआर जयपुर, पता-भगवान परिसर, ब्लाक-ए, द्वितीय तल फ्लैट नं. 201, बगली रोड मिसरोद, भोपाल म.प्र. मोबा.9893737231.

नाम- मोहिता रघुवंशी, जन्मतिथि-24 अगस्त 1979, जन्मस्थान-होशंगाबाद, समय-10 बजकर 30 मिनट सुबह, कद- 5 फिट 2 इंच, रंग-गोरा, योग्यता-एमए हिंदी साहित्य, पीजीडीसीए, व्यवसाय-प्रायवेट स्कूल में कार्य, पिता-सुरेशचंद्र रघुवंशी सेवानिवृत्त निम्नश्रेणी लिपिक, केंद्रीय विद्यालय सिवनी मालवा, होशंगाबाद, माता-श्रीमती उर्मिला रघुवंशी, भाई-दो, गोत्र-सोंगर, मामा गोत्र-हड़ा, पता-राजीव नगर, डॉ. हसन के पीछे, होशंगाबाद, फोन-9826491699, 9926740553.

नाम- सविता रघुवंशी, जन्मतिथि-6 मई 1991, लम्बाई 5 फीट 6 इंच, गोत्र-पचोलिया, मामा का गोत्र गुनियार, शिक्षा- एमबीए फाइनेंस मार्केटिंग, असिसटेंट मार्केटिंग मैनेजर, एस.आर.के. प्रा. लि., पीथमपुर, पिता- मदनसिंह रघुवंशी, माता- सुनीता रघुवंशी, पिता का व्यवसाय-कृषि, निवास स्थान- ग्राम पोस्ट उटावद, जिला-धार म.प्र., सम्पर्क-9893007050, 9713557051

नाम- दीपिका रघुवंशी, जन्मतिथि- 24 अप्रैल 1993, लम्बाई 5 फीट 4 इंच, गोत्र-पचोलिया, मामा का गोत्र गुनियार, शिक्षा- बी.ई. फाइनल इलेक्ट्रिकल, पिता- मदनसिंह रघुवंशी, माता- सुनीता रघुवंशी, पिता का व्यवसाय-कृषि, निवास स्थान- ग्राम पोस्ट उटावद, जिला-धार म.प्र., सम्पर्क-9893007050, 9713557051

# लिखना एक अनोखा हुनर है

डॉ. एच.सी. नवल, इंग्लैंड

लिखना मनुष्य की प्राकृतिक आकांक्षा और बौद्धिक योग्यता का लक्षण माना जाता है। बचपन से ही बच्चे अपनी नन्हीं उम्र में डूडल्स बनाकर अपनी उभरती हुई प्राकृतिक उत्कंठा का प्रदर्शन करने लगते हैं। पाठशालाओं और कालेजों में लिखने के लिए उत्साहित किया जाता है और अधिकांश विद्यार्थी लिखने का प्रयास करना शुरु करते हैं तथा अपनी कहानियां या लेख मेगजीन में छपने की उत्सुकता बढ़ाते हैं। कई लोगों को अपने जीवन में लेखक बनने का जुनून उठता है और वह अपने माइंड में उमड़ते-घुमड़ते भावनात्मक विचारों को कविता, कहानी या लेख का रुप देकर कागज के पन्नों पर सजा देते हैं। लिखने और बोलने की स्वतंत्रता हर आदमी का नैतिक अधिकार होता है। कविताएं रचने वाला कवि अपने शब्दों को कविता की माला में पिरोता है। कहानीकार अपने मनगढंत विचारों को समेट कर कहानी का रुप देता है, साइंटिस्ट दुनिया में नयी खोजों और आविष्कारों का लेखाजोखा हमारे सामने लाते हैं। इसी प्रकार धार्मिक, पालिटिकल, कमेडिकल और अन्य विभिन्न क्षेत्र भी अपने-अपने विभागों का विस्तृत लेखा लिखकर समाज को सौंपते रहते हैं। इसीलिए हम लेखकों के लिखे इस साहित्य को समाज का दर्पण कहते हैं। कुछ देर के लिए हम सोचें कि यदि साहित्य का यह अपार उल्लेख नहीं होता तो हमारा संसार कितना सूना दिखाई देता।

हमारे पुस्तकालय प्रसिद्ध लेखकों और महान विभूतियों के मस्तिष्क से उतरे विचारों से लबालब भरी किताबों का भंडार है। उदाहरण के लिए तुलसीदासजी को कौन नहीं जानता उनकी लिखी रामायण एक धार्मिक ग्रंथ प्रायः हर एक हिंदू के घर में संभाल कर सजाया हुआ है। मुंशी प्रेमचंदजी की कहानियां और उपन्यास हम सब लोगों ने पढ़े हैं। जवाहरलाल नेहरुजी के पत्र अपनी पुत्री के लिए किताब डिस्कवरी आफ इंडिया और सरतचंद चट्टोपाध्यायजी के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास, परिणीता भी सभी ने पढ़े होंगे। भारत के प्रसिद्ध नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोरजी की लिखी गीतांजलि और अनेक उपन्यास तथा कहानियां केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्धी के शिखर पर हैं। हम सबको उन पर गर्व है। कई विदेशी लेखक जैसे सेक्सपियर के नाटक, एच.जी. वेल्स की कहानियां और थॉमस हार्डी की पोयट्रहज इत्यादि दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं और पढ़ने लायक साहित्य हैं।

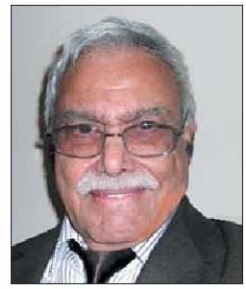

यह जानकर हमें खुशी होती है और हम सब आभार प्रकट करते हैं उन प्राचीन लेखकों एवं साहित्यकारों के लिए जो हमारे और आगे आने वाली पीढ़ियों को एक बड़ी सौगात छोड़ गए हैं। आजकल भी इंग्लैंड में नये लेखकों को साहित्य संबंधित प्रेरणा और उत्साह बढ़ाने के लिए हर साल किसी भी देश के या किसी विषय पर सबसे अच्छी किताब लिखने वाले लेखकों को महत्वपूर्ण बुकर अवार्ड नामक पुरस्कार से सुशोभित किया जाता है।

### लिखने के स्वाथ्यवर्धक गुण

लिखने की प्रतिक्रिया हमारे ब्रेन से बहुत संबंध रखती है। इससे सेंट्रल नर्वस सिस्टम, ब्रेन सर्किटस और पाथवेज में उत्तेजना पैदा होती है और कई लाभदायक रसायनों का प्रवाह बढ़ता है, हमारे मानसिक स्वास्थ्य को सबल और सुरक्षित बनाने में योग देते हैं। मुख्यतः ब्रेन के हायर फंक्शन जैसे मेमोरी, लर्निंग, नॉलेज और ईगो को बढ़ावा मिलता है। विचारों में एकाग्रता आती है, संतुलन और संयम पुष्ट होता है। माइंड के विकारों, टेंशन, डिप्रेशन आदि के निवारण में मदद मिलती है। सुख और आनंद का वातावरण सक्रिय होता है। हम सबने आभास किया होगा कि कवि सम्मेलन में कविता के बोल, फिल्मों के डायलॉग और लिरिक्स हमारे मन की गहराई को कुरेद देते हैं और हमारे माइंड में हर्ष, उन्माद, उल्लास का झरना झलक उठता है। देखा जाए तो दुनिया में लिखने वाले अनगिनत लोग हैं लेकिन पढ़ने वालों की संख्या उनसे भी कहीं अधिक है इसलिए लिखते रहिएगा और खुलकर उदाहरता से बांटते रहिएगा अपने कौशल को। मस्तिष्क में दबी हुई यह आंतरिक धरोहर बांटने से कभी कम नहीं होगी बल्कि और भी बढ़ेगी।

# समाज के लिए मिसाल बन गईं श्रद्धा

भोपाल। अपनी मौत के बाद एक महिला को नई जिन्दगी देने वाली श्रद्धा रघुवंशी अब न केवल रघुवंशियों के लिए बल्कि समूचे समाज के लिए एक मिसाल बन गयी हैं। उसकी शोकसभा में जुटे सकड़ों लोगों ने भी प्रभावित होकर अपने अंग दान करने का संकल्प लिया है। उपस्थित लोगों का कहना था कि श्रद्धा और उसके परिवार ने पूरे समाज के सामने एक नया आदर्श पेश किया है जिसे हम सब आगे बढ़ायेंगे। पिछले 6 माह से डायलेसिस पर जीवन-मौत से संघर्ष कर रही श्रद्धा ने अपना हृदय और लीवर डोनेट करने की अनुमति दी थी। श्रद्धा के लिए भाई सिद्धार्थ ने अपनी नौकरी

छोड़ दी थी क्योंकि वह अपनी इकलौती बहन का इलाज कराना चाहता था। पिछले 6 माह से यह परिवार भोपाल में ही था। परिजनों के अनुसार श्रद्धा पूरे परिवार की लाडली थी। सिद्धान्ता अस्पताल में देर रात तक चला लीवर ट्रांसप्लांट आपरेशन सफल रहा। डाक्टरों ने दिल्ली से आई एक महिला को श्रद्धा का लीवर ट्रांसप्लांट किया था। जब श्रद्धा की माँ कविता को श्रद्धा के अंग दान की खबर मिली तो उनकी उदास आंखों में भी चमक आ गई। उनका कहना था कि उनकी बेटी हमेशा दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहती थी और जाते-जाते वह किसी को नई जिन्दगी दे गयी।

कहानी

# श्रद्धा

## प्रो. अनुपमा भेदी

मेजर दीवान की पलटन जम्मू आ गयी, यह वार्ता सुनकर मनीषा, उनकी पत्नी बहुत खुश हुई। पिछले दो साल से पलटन जम्मू के तंगधार सेक्टर में तैनात थी। वहां फैमिली को अनुमति नहीं थी इसलिए मनीषा ससुराल नागपुर में अपने दो साल के बेटे के साथ रहीं। तंगधार से चिट्ठी आने में भी दस-दस दिन लगते थे और उस जमाने में यानी 70 के दशक में मोबाइल तो दूर हर घर में लैंडलाइन भी नहीं था। मेजर दीवान का जल्दी ऐसी जगह तबादला हो जहां फैमिली जा सके इसलिए मनीषा ने पता नहीं कौन-कौन से भगवान से क्या-क्या मन्नते मांगी थीं।

आखिर पलटन जम्मू हा ही गयी। जहां मनीषा बेटे को लेकर जा सकती थी, किन्तु एक समस्या थी। उस समय जम्मू का वह इलाका फौजी भाषा में साफ्ट फील्ड या हाईपीस कहलाता था इसलिए वहां के क्वार्टर्स पक्के मकान नहीं थे। छत पर बाशा नाम की घास बिछी हुयी थी और दीवारें मिट्टी की बनी थीं। बिजली के साधनों का उपयोग प्रतिबंधित था क्योंकि आग लगने का डर था, केवल रात को दो बल्ब जलाने की अनुमति थी। फिर भी जम्मू आकर मनीषा बहुत खुश थी, क्योंकि पति के साथ रहने का सुख था। जैसे तैसे उसकी गृहस्थी शुरु हो गयी। साथ वाला क्वार्टर अभी खाली था। कोई महाराष्ट्रीयन फैमिली आनी चाहिए और उनके बच्चे हों तो और भी अच्छा होगा इससे मुझे और मेरे बच्चे को कंपनी मिल जायेगी, मनीषा यही सोचती रहती थी।

लेकिन यह क्या? एक डेढ़ महीने बाद वहां मेजर अख्तर रहने आये। उनके बच्चे भी बड़े थे, मनीषा मन ही मन नाराज हो गयी। वैसे मुस्लिम परिवार से दोस्ती करना उसे पसंद नहीं आ रहा था, परन्तु क्या करे? फौज में इन बातों को कौन ज्यादा तूल देता है? पड़ोसी होने के नाते उनका एक-दूसरे के घर आना जाना शुरु हो गया। नये पड़ोसी के साथ मनपसंद न सही लेकिन समय ठीक-ठाक गुजर जाता था और ऐसे ही दिन बीतते रहे। मिसेज अख्तर को भी बिजली के उपकरणों का प्रयोग न करने के बारे में बताया गया था लेकिन उन्होंने यह बात गंभीरता से नहीं ली और बिजली के चूल्हे पर खाना बनाती रहीं। एक दिन शार्ट सर्किट हो गया और नतीजतन आग लग गयी। मकान बच्चे थे और छत घास की थी इसलिए देखते ही देखते आग भड़क उठी। मेजर अख्तर के साथ-साथ मनीषा का घर भी आग की चपेट में आ गया। उस वक्त मनीषा बाजार गयी हुयी थी। मनीषा घर की तरफ मुड़ी ही थी कि उसने देखा मेजर दीवान का सहायक बाजार में

बदहवास सा घूम रहा है। ''अरे श्याम , आप यहां क्या कर रहे हो? मनीषा ने उससे पूछा।'' 'मैडमजी मैं आप ही को ढूंढ रहा था। जल्दी घर चलिए, आपका घर आग से घिरा हुआ है' कहते हुए वह घर की तरफ दौड़ पड़ा। मनीषा को ठीक से कुछ समझ तो आया नहीं, लेकिन श्याम को दौड़ता देख मनीषा भी बेटे को उठाकर उसके पीछे भागी। दोनों तब तक घर पहुंचते जवानों ने मनीषा के घर का सामान बचा लिया, लेकिन दोनों फैमिली थोड़े ही समय में मानो घर से बेघर हो गयीं। आंखों के सामने घर को जलते हुए देखकर मनीषा सुन्न हो गयी। वह मन ही मन मिसेज अख्तर के साथ-साथ सारे मुसलमानों को कोसती रही। शाम तक दोनों फैमिली पलटन के मेस में रहने गये। मिसेज अख्तर ने मनीषा से बहुत बार माफी मांगी। जब मेजर दीवान ने उनको समझाया तब कहीं मुश्किल से मनीषा ने मिसेज अख्तर के साथ बात करना शुरु किया। आखिर मिसेज अख्तर को भी तो उनकी गलती की सजा मिली थी।

दस-बारह दिन ऐसे ही गुजरे। मनीषा दूसरा क्वार्टर कब मिलेगा इस इंतजार में थी। एक दिन आफिस से आकर मेजर दीवान ने वह खुशखबरी दे ही दी दूसरा क्वार्टर मिलने की। 'पक्का मकान है ना? मनीषा ने पूछा,' नहीं! यह भी बाशा ही है, मेजर दीवान ने बताया। मुझे नहीं रहना फिर से ऐसे घर में- मनीषा गुस्से में बोली। 'ठीक है! तो तुम नागपुर वापस चली जाओ मम्मी-पापा के पास... मेजर दीवान फौजी स्टाइल में बोले। मिसेज दीवान हतप्रभ सी हो गयी। मन ही मन में आगबबूला हो गयी मनीषा। पति को छोड़कर नागपुर वापस जाने का सवाल ही नहीं था लेकिन दोबारा उस कच्चे मकान में, बाशा में रहने की हिम्मत भी नहीं थी। पर करती भी क्या बेचारी, फौज में अपनी मर्जी कहां चलती, नाराजगी के साथ शाम को मेजर दीवान के साथ मनीषा क्वार्टर देखने गयी, पर ये क्या? घर के आंगन में दाखिल होते ही बायीं ओर एक

पीरबाबा की मजार थी, उस पर हरी चादर चढ़ी थी और धूप जल रहा था। 'हे भगवान! ये सब क्या है? मनीषा चीखते हुए बोली। 'सुनो मैं इस घर में किसी भी हालत में नहीं रहूंगी', उसने पति को अपना फैसला सुनाया। वैसे मेजर दीवान को भी यह मजार वाली बात अटपटी लगी। लेकिन फौजी होने के कारण उन्होंने उस बात को ज्यादा तवज्जो नहीं दी। दरअसल मनीषा, ये क्वार्टर मेजर अख्तर को मिलने वाला था लेकिन अगले महीने उनकी पोस्टिंग होने वाली है इसलिए उन्होंने क्वार्टर लेने से मना किया और हमें लेना पड़ा। खैर कोई बात नहीं, धीरे-धीरे तुम्हें इसकी आदत हो जायेगी...मेजर दीवान मनीषा को समझाते रहे। न चाहते हुए भी नाराज हुयी मनीषा को दो-चार दिनों में उनके साथ वहां रहने जाना पड़ा।

अपने घर के प्रति मनीषा की जो लगन थी उसके रहते थोड़ी हिम्मत और थोड़ा उत्साह लगाकर वह घर को संवारने में जुट गयी। पुराने घर से लाया हुआ तुलसी का पौधा उसने आंगन में एक गमले में लगा दिया। हर शाम को तुलसी के आगे दिया जलाना उसकी आदत थी, जब भी वह दिया जलाने जाती पीरबाबा के मजार पर नजर रुक सी जाती थी...दिल बैठ जाता उसका, लेकिन फिर दिल को समझाकर शान्त हो जाती थी। मनीषा अपने पति और बेटे के साथ उस माहौल से अभ्यस्त होने ही वाली थी कि एक दिन मेजर दीवान ने आकर बताया कि उन्हें तीन महीने के लिए टेम्परेरी ड्यूटी फारवर्ड एरिया में जाना है। 'फिर आप मुझे अकेला छोड़कर चले जाओगे? मनीषा ने बेहद आश्चर्य और अविश्वास से पूछा। 'हां जाना तो पड़ेगा ही, उन्होंने खामोशी से कहा।' वहां खतरा है? टेंशन है? उसके सवाल खत्म होने का नाम नहीं ले रहे थे। 'फौज में तो रोज ही टेंशन होते हैं फिर ये फिक्र कैसी? वह बोले।' दूसरे दिन सुबह जल्दी मेजर दीवान चल पड़े। बेटे को हल्का बुखार था इसलिए मनीषा बाहर नहीं आयी। वह वैसे भी रुठ-सी गयी थी। जैसे दिन चढ़ता गया मनीषा के बेटे आदित्य का बुखार बढ़ता गया। वह उसे लेकर पलटन के डाक्टर के पास गयी। डाक्टर ने दवा दी और चेतावनी भी दी कि अगर कल तक बुखार नहीं उतरा तो बेटे को सेना के अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा और कुछ टेस्ट भी करने पड़ेंगे।

मनीषा बहुत डर गयी। पति के बिना एकदम अकेला महसूस करने लगी। रोने को दिल कर रहा था। ''मेरे बच्चे को जल्दी से ठीक कर दे भगवान, अस्पताल में भर्ती होने की नौबत न आने दे।'' वह प्रार्थना करती रही। मनीषा दिन भर बेटे को गोदी में लेकर बैठी रही। खाना खाने की बात तो दूर उसने चूल्हा भी नहीं जलाया। शाम होने को आयी। आदित्य को उसने धीरे से बेड पर लिटाया। भगवान के पास दिया जलाकर वह बाहर तुलसी के पास दिया लेकर पहुंची, दिया रखकर जैसे ही मनीषा मुड़ी तो उसने देखा कि मिसेज अख्तर पीरबाबा के मजार पर धूप जला रही थीं। 'कैसी है अब बेटे की तबियत? उसे देख मिसेज अख्तर ने पूछा। मिसेज अख्तर की फिक्र भरी आवाज सुनकर मनीषा को रोना आ गया, सुबह से तन्हा होने का बोझ मन पर जो था। ''डरो नहीं बेटे'' मिसेज अख्तर ने पास आकर अपनत्व से कहा, मौसम बदलने से छोटे बच्चे अक्सर बीमार पड़ते हैं, घबराओ नहीं, अल्लाह पर भरोसा रखो, सब ठीक हो जायेगा। आपने सुबह से कुछ खाया है या नहीं? ऐसा करते हैं मैं आपके लिए खाना लेकर आती हूं और आज रात आपके साथ रहती हूं ताकि रात में आप अकेले नहीं होंगे।

उनके व्यवहार से मनीषा ने बड़ी राहत महसूस की। रात को उनका साथ रहना उसे बड़ी हिम्मत दे गया। 'आपने दिन भर आराम नहीं किया है, ऐसा करो कुछ देर आराम कर लो आप। मैं आदित्य का खयाल रखती हूं- मिसेज अख्तर ने जोर देकर उसे आराम करने को बाध्य किया मगर मनीषा को नींद कहां आने वाली थी। रात बेटे की फिक्र में आंखों-आंखों में बीत गई। भोर सुबह उसकी पलकें बोझिल होने लगीं। मिसेज अख्तर सुबह होते ही चली गयीं, उनके जाने के बाद मनीषा ने दरवाजा बंद किया और बेटे के पास अनमने मन से अलसाई हुई लेटी रही। एकाध घंटे के बाद जब उसकी आंख खुली तो उसने देखा आदित्य उठकर बैठा था और खिलौने के साथ खेल रहा था। उसे अब बुखार भी नहीं था। मनीषा को बड़ा सुकून मिला, दिल का बोझ जैसे उतर गया हो। फिर भी मन उदास रहा क्योंकि अब पति की चिंता थी। मनीषा ने यंत्रवत रोज के काम किए। दिन जैसे-तैसे गुजरा।

हर शाम की तरह तुलसी के पास उसने दिया जलाया। उसने देखा आज पीरबाबा के मजार पर अंधेरा था। मिसेज अख्तर ने देर की है शायद आज आने में या फिर कोई और वजह हो उनके न आने की। वह सोचने लगी, कुछ देर स्तब्ध रहने के बाद मनीषा आगे बढ़ी। उसने पीरबाबा की मजार पर धूप जलाया, मजार रोज की तरह रोशन हो उठी और नन्हा सा एक दीप मनीषा के मन में भी जल उठा, श्रद्धा से वह नतमस्तक हो उठी, इन सब हालातों ने जैसे जीवन के प्रति देखने का उसका नजरिया ही बदल दिया।

-39 जयराम नगर, शंकर नगर रोड
अमरावती, (महा.)

# भगवान शिव की महिमा

## कल्याण सिंह रघुवंशी

भगवान शिव आदिदेव हैं, इसलिए उन्हें महादेव कहा जाता है। वह परब्रह्म हैं। सृष्टि के सृष्टा हैं, पालनकर्ता हैं और संहारकर्ता भी वही हैं। भगवान शिव का नाम किसी भी तरह जपा जाये शुद्ध अथवा अशुद्ध, जानकर अथवा अनजाने में, ध्यान से अथवा असावधानी से, वह अवश्य ही इच्छित फल प्रदान करता है। भगवान शिव के नाम की महिमा को बुद्धि और विवेक द्वारा प्रमाणित नही किया जा सकता, किन्तु श्रद्धा और भाव सहित नाम स्मरण और संकीर्तन से अवश्य ही अनुभव किया जा सकता है। प्रत्येक नाम असंख्य शक्तियां से संपन्न है। नाम की शक्ति अनिवर्चनीय है, इसकी महिमा अवर्णीय है। भगवान शिव के नाम की सामर्थ्य और उसमें अन्तर्निहित शक्ति अथाह है। भगवान शिव के स्त्रोत और उनके नाम के निरंतर स्मरण से मन पवित्र होता है। स्त्रोत शुभ और शुद्ध भावों से ओतप्रोत है। शिव स्त्रोत द्वारा अच्छे संस्कार सुदृढ़ होते हैं। स्वामी शिवानंद सरस्वती के कथनानुसार ''मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बनता है।'' यह मनोवैज्ञानिक नियम भी है। निरन्तर अच्छे विचारों के प्रस्फुटन से उसके संस्कारों एवं चरित्र का स्वरुप बदल जाता है।

स्वामी शिवानंद जी सरस्वती की मान्यता है कि प्रभु के स्त्रोत गान करते हुए जब मन उनकी छवि पर ध्यान करता है तब मन वास्तव में प्रभु की छवि का ही रुप धारण कर लेता है। विचार की छाप मन पर रह जाती है। यह संस्कार कहलाती है। इसे बार-बार दोहराने से संस्कार और भी दृढ़ हो जाते हैं और मन का स्वभाव बन जाते हैं। ईश्वर से अथवा भगवान शिव से तादात्म्य बढ़ाने के लिए उनके स्त्रोतों का नियमित व निरन्तर गान करना चाहिए। इनमें शाश्वत आनंद व अनन्त शांति प्रदान करने की शक्ति है। भगवान शिव ब्रम्ह के विनाशकारी स्वरुप का परिचायक हैं। ब्रम्ह का वह अंश जो तमोगुण प्रधान माया द्वारा आच्छादित है, वही सर्वव्यापक कैलाशवासी भगवान शिव हैं। वे ज्ञान के भंडार हैं। पार्वती, काली या दुर्गा से रहित शिव शुद्ध निर्गुण ब्रम्ह हैं। माया यानी पार्वती के सहित वे अपने भक्तों की पावन भक्ति के लिए सगुण ब्रम्ह हो जाते हैं। शिव पुराण में इसकी विशद व्याख्या की गई है। ऋषि मुनियों का मत है कि राम-भक्तों को भगवान शिव की भक्ति अवश्य करनी चाहिए। स्वयं भगवान राम ने भी प्रसिद्ध रामेश्वरम् स्थल पर भगवान शिव की स्थापना की थी एवं तपस्या की थी। शिव तपस्वियों और योगियों के इष्ट हैं।

भगवान शिव की महिमा का गायन या स्तुतियों से पुराण व अनेक ग्रंथ भरे पड़े हैं, किन्तु जनसामान्य तथा भगवान राम-भक्तों व उनके वंशजों के लिए कुछ लघु स्त्रोत यहां उल्लेखनीय हैं, भक्त अपनी दैनिक दैनंदिनी में सम्मिलित कर लाभ उठायें। स्त्रोतों का

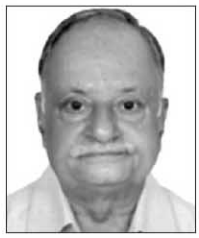

उल्लेख करने के पूर्व भगवान शिव की स्तुति या तपस्या के लिए निम्न दो मंत्रों का उल्लेख करना उचित होगा जो अति प्रचलित हैं साथ ही जन-सामान्य के लिए उपयोगी हैं-

1- ऊँ नमः शिवाय

2- ऊँ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

:: शिव- पंचाक्षर- स्तोत्रम ::

श्लोक- नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्मांणराम महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

अर्थ- कंठ में सर्पो के हार वाले, तीन नेत्रों वाले, भस्म से लेपित, दिशाओं के वस्त्र वाले अर्थात् नग्न उन शुद्ध अविनासी महेश्वर ''न'' कार स्वरुप शिव को नमस्कार है।

श्लोक- मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय नंदीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।

मंदार पुष्प बहु पुष्प सुपूजिताय तस्मैमकाराय नमः शिवाय।।

अर्थ- मैं उन ''म'' कार स्वरुप शिव को प्रणाम करता हूं जो मदार तथा अन्यान्य ऐसे ही दिव्य पुष्पों से पूजित हैं, गंगाजल और चंदन से जिसकी अर्चा हुई है, जो नंदी के अधिपति और प्रमथगणों के स्वामी हैं।

श्लोक- शिवाय गौरी बदनार विदं सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।

श्री नीलकंठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।

अर्थ- ''शि'' कार स्वरुप नीलकंठ भगवान शिव को दक्ष के यज्ञ के नष्ट करने वाले तथा गौरीके मुखकमल को विकसित करने वाले सूर्य स्वरुप को, ध्वजा में बैल का चिन्ह धारण करने वाले शोभाशाली भगवान को हमारा नमस्कार है।

श्लोक- वासिष्ठ कुंभोदभव गौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।

चन्दार्क वैश्वानरे लोचनाय तस्मैवकारायनमः शिवाय।।

अर्थ- वसिष्ठ, अगस्त्य तथा गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने सदैव जिनकी पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य व अग्नि जिनके तीन नेत्र हैं, उन ''व'' कार स्वरुप, देवों के देव महादेव को नमस्कार है।

श्लोक- यक्ष स्वरुपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।

अर्थ- उन दिव्य सनातन पुरुष, उन दिगम्बर देव

''य''कार स्वरुप शिव को नमस्कार है, जिन्होंने यक्ष रुप धारण किया है जो जटाधारी हैं और जिनके हाथ में पिनाक है।

श्लोक- पंचाक्षर मिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ।

शिव लोकम वाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

अर्थ- जो शिव के सम्मुख इस पवित्र पंचाक्षर का पाठ करता है, वह परम शिवधाम को प्राप्त करता है और वहां शिव के साथ परमानंद को भोगता है।

:: शिव-षडाक्षर-स्तोत्रम ::

श्लोक- ऊँ कारं विन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामंदं मोक्षदं चैव ऊँकाराय नमो नमः।।

अर्थ- हम सदैव उस बिन्दुयुक्त ''ऊँ'' कार को प्रणाम करते हैं जिसका योगी निरन्तर ध्यान करते हैं और जो समस्त कामनाओं तथा परम मोक्ष को देने वाला है।

श्लोक- नमन्ति ऋषयोदेवा नमन्त्यप सरसां गणः।

नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः।।

अर्थ- मनुष्य और संत, देवताओं और अप्सराओं के समूह, उस ''न'' कार स्वरुप परमात्मा को नमस्कार करते हैं। हमारा उन्हें बारम्बार नमस्कार है।

श्लोक- शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रह कारकम्।

शिवमेक पदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ।।

अर्थ- वह सर्वकल्याणकारी और सर्वशक्तिमान, विश्वनाथ ''शि''कार स्वरुप, जो जगत को सुख-शांति प्रदान करने वाला है, जो एक शाश्वत शिव है, को हमारा बारम्बार प्रणाम है।

श्लोक- वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठ भूषणाम।

वामे शक्ति धरं देवं वकाराय नमो नमः।।

अर्थ- जो बायें हाथ में शक्ति धारण किए हुए हैं, बैल जिसका वाहन है, सर्पराज वासुकि जिसके कंठ का आभूषण उन ''व'' कार स्वरुप शिव को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं।

श्लोक- यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।

यो गुरुः सर्व देवानां यकाराय नमो नमः।।

अर्थ- ''य'' कार स्वरुप उन सर्वव्यापक महेश्वर को, जो साकार भी हैं और निराकार भी, जो समस्त देवताओं के गुरु हैं और हमारे भी गुरु हैं, वे जहां कहीं भी हों उन्हें हमारा बारम्बार प्रणाम है।

श्लोक- षडक्षर मिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिव सन्निधौ।

शिव लोकम् वाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

अर्थ- जो इस षडक्षरं स्तोत्रं ''ऊँ नमः शिवाय''का भगवान शिव के सम्मुख पाठ करता है, वह परम शिव धाम में परम आनंद को प्राप्त करता है।

इस प्रस्तुत विनम्र आलेख में प्रारंभ में दो श्लोक-मंत्र- पश्चात दो लघु स्तोत्र दिए गए हैं। इनके समान भगवान शिव से संबंधित छोटे-छोटे अनेक स्तोत्र सद्ग्रंथों में उपलब्ध हैं जैसे लिंगाष्टकम, शिव-कवच शिव महिमन स्तोत्र और रुद्र-उपनिषद आदि। भगवान शिव एवं भगवान राम के अनुगामियों के लिए इनका नियमित जप अथवा पठन-पाठन करना चाहिए। इससे आत्मिक तथा आध्यात्मिक लाभ मिलता है। शास्त्रकारों और संतों की दृष्टि में भगवान शिव, भगवान विष्णु और इनके अवतार भगवान राम ''एकोहिं द्वितियोनास्ति'' के अनफरुप भिन्न नहीं एक ही हैं। यथा ''शिवष्य हृदयं विष्णु विष्णोश्च हृदयं शिवः''-शिव का हृदय विष्णु हैं और विष्णु सा हृदय शिव है। यह शैव, वैष्णव तथा रामानुज सम्प्रदाय पांच से सात सौ वर्ष पुराने हैं। इसके पूर्व यह साम्प्रदायिक उपासना या कट्टरता नहीं थी। तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस में भगवान राम द्वारा रामेश्वरम् में भगवान शिव की स्थापना के समय भगवान राम ने भगवान शिव के लिए उद्गार प्रकट किए हैं-

चौपाई- शिवद्रोही मम् भगत कहावा। सो नर सपनेहु मोहि न पावा।।

इसी के अनुरुप एवं परिप्रेक्ष्य में तुलसीदासजी ने रामचरितमानस के उत्तरकांड में अति सुंदर शिव स्तुति प्रस्तुत की है यथा ''नमामीश मीशान निर्वाण रुपं''।

अतः राम भक्तों के या उपासकों के लिए भगवान शिव की भी भक्ति या उपासना करना अभीष्ट है।

बी/9, रायल रेसीडेंसी,
भोपाल म.प्र.
मोबा. 9406533839

# 51वां श्रीराम चरित मानस सम्मेलन

उदयपुरा। समीपस्थ ग्राम पचामा में 31 दिसम्बर 2017 से 06 जनवरी 2018 तक 51वां श्रीराम चरित मानस सम्मेलन जय माँ काली मंदिर पर पूज्यपाद श्री नित्यानंद जी गिरि (उ.प्र.) के मुखारविंद से किया जा रहा है। अतिथि वक्ता गणों में श्री वल्लभचारी वापोली धाम, श्री मनमोहन मुद्गल, सोहागपुर, सुश्री प्रज्ञा भारतीय भोपाल, वैभव भेटेले आदि प्रमुख शामिल होंगे। मंच संचालन सुरेन्द्र शास्त्री करेंगे। मानस सम्मेलन समिति के अध्यक्ष एच.एस. रघुवंशी व संयोजक चतुर नारायण रघुवंशी एडवोकेट ने सभी सामाजिक बंधुओं से कार्यक्रम में भाग लेकर सफल बनाने की अपील की है।

# महाबलवान भगवान हनुमान

## गोवर्धनपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी महाराज

अंजनीपुत्र, पवनसुत, शंकरसुवन, केसरीनंदन आदि पद संत-शिरोमणि, कविशिरोमणि, भक्तशिरोमणि, कलिपावनावतार श्रीतुलसीदास जी ने महाबलवान भगवान श्रीहनुमानजी के लिए प्रयुक्त किये हैं। लोगों को भ्रम होता है कि एक साथ ये इतने व्यक्तियों के पुत्र कैसे कहे गये? किन्तु वस्तुस्थिति पर विचार करें तो सब सुव्यवस्थित ही है। भगवान भूतभावन विश्वनाथ शंकर के अवतार होने के कारण ये शंकरसुवन हैं। 'आत्मा वै जायते पुत्रः' इस शास्त्र-वचनानुसार वानरराज केसरी के औरस पुत्र होने के कारण इन्हें केसरीनंदन कहना सर्वथा सुसंगत ही है। पुञ्जिकास्थला नाम की अप्सरा शाप भ्रष्ट होकर कामरुप वानरी के रुप में अवतरित हुई। एक बार वह मनुष्य के रुप में दिव्यातिदिव्य वस्त्राभूषण से सुसज्जित हो पर्वत पर विचरण कर रही थी। वायुदेव ने एक सपाटे में उसकी ओर वहन किया। उसने तुरन्त कहा-''कौन मुझ प्रतिव्रता का स्पर्श करके अपने सर्वनाश को आमंत्रित कर पतन के घोर गर्त में गिरने को लालायित हो रहा है?'' सर्वप्राण वायुदेव बोले-''देवि! ऐसी बात नहीं है। अन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक अशरणशरण अकारण करुण करुणा वरुणालय निर्गुण-निराकार भगवान भूभारापहरणार्थ मानव रुप धारण कर रावणादि असुरों का कदन करने के लिए अवतरित हो रहे हैं। मैं उनकी सेवा के लिये तुम्हारे उदर में पुत्र रुप में आना चाहता हूं, कृपया क्षमा करें।'' बस पवनसुत और अंजनीपुत्र रुप से इनकी विख्याति का यही कारण है।

इन सब बातों पर विश्वास न करने वाले सज्जनों से भी इतना मान लेने की आशा तो हमें रखनी ही चाहिये कि श्रीहनुमान जी महाराज के रुप में एक निखरा हुआ व्यक्तित्व सबके सामने आता है। एक अकेला व्यक्ति रावण जैसे विश्व विजयी शत्रु के घर में घुसकर अपना ध्येय पूर्ण करने के बाद शत्रु समुदाय से घिरा होने पर भी निर्भीक रुप से ललकार कर अपने स्वामी का जय-जयकार करता हुआ कहता है-''खबरदार! मेरा सामना करने की थोड़ी-सी भी चेष्टा विनाशक सिद्ध होगी। मैं उन स्वामी का सेवक हूं जो स्वयं अति बलवान हैं और जिनके अनुज भी वैसे ही हैं। वानरराज सुग्रीव उनके सेवक बन चुके हैं, जिनके बल पराक्रम की कहीं तुलना नहीं। फिर मैं उन स्वामी का सेवक हूं जिन्हें संसार में कठिन से कठिन कार्य करने में भी कोई क्लेश नहीं होता। मैं स्वयं भी वह हनुमान हूं जिसके शरीर पर इन्द्र का वज्र भी कुछ प्रभाव न डाल सका। समस्त संसार भी शत्रु बन कर अपनी सेनाएं मेरे सामने भेज दे तो मैं उनका विनाश करके ही छोड़ूंगा। याद रखो, मैं वायुदेव का पुत्र होने के कारण उतना ही बलवान भी हूं। अजी और कहीं यह डींग हांको, पता भी है- यह रावण की लंका है जिससे सभी देव-दानव-मानव थर्राते हैं? होगी, हमें इसकी चिनता नहीं। एक क्या हजारों रावण भी अकेले मेरे सामने नहीं टिक सकते। 'रावण के पास तोप, टैंक, मशीनगन, एटमबम, हाइड्रोजन बम, राकेट आदि हैं, तुम्हारे पास तो कुछ नहीं।' ये सब के सब धरे ही रह जायेंगे, जब मैं पर्वतों, पर्वत शिलाओं, वृक्षों-महावृक्षों से प्रहार करने लगूंगा तो सृष्टि उलट-पलट हो जायेगी। तुमसे जो करते बने करो मैं इस सोने की लंका को तहस- नहस कर अपना काम पूरा कर राव के देखते-देखते जगन्माता जानकी के चरणों में प्रणाम कर, अपना काम पूरा करके चला जाऊंगा और तुम सभी हाथ मलते और पछताते ही रह जाओगे।'

कहना न होगा कि महाबलवान भगवान हनुमान ने ये सब की सब प्रतिज्ञाएं एकाकी, असहाय और अस्त्रबल, शस्त्रबल, सैन्यबल एवं संघटन बल से शून्य होते हुए भी केवल बुद्धिबल और बाहुबल के आधार पर परिपूर्ण कीं। इष्टदेव भगवान चन्द्रमौलीश्वर और भगवती विमलाम्बा के चरणों में हमारी विनम्र प्रार्थना है कि इस संकट के समय राष्ट्र में घर-घर एवं जन-जन में भगवान हनुमान जैसी भावना और कार्यक्षमता उत्पन्न हो।

कल्याण से साभार...

# मनोज रघुवंशी आईडीसीए के उपाध्यक्ष बने

इंदौर। इंदौर क्रिकेट डिवीजन आईडीसीए के अध्यक्ष एवं भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने नई कार्यकारिणी एवं प्रबंधन समिति की घोषणा करते हुए खरगोन के पत्रकार मनोज रघुवंशी को चौथी बार उपाध्यक्ष मनोनीत किया है। श्री रघुवंशी जिला क्रिकेट एसोसिएशन खरगोन के अध्यक्ष भी हैं। रघुवंशी के चौथी बार उपाध्यक्ष मनोनीत होने पर खरगोन जिला क्रिकेट एसोसिएशन परिवार ने श्री विजयवर्गीय एवं आईडीसीए के सचिव अमिताभ विजयवर्गीय सहित पूरी कार्यकारिणी का आभार व्यक्त किया एवं श्री रघुवंशी को बधाइयां एवं शुभकामनाएं दीं।

मनोज रघुवंशी

# 121 वर्षीय चौधरी प्रताप सिंह रघुवंशी ने किया इच्छामृत्यु का वरण

बरेली(रायसेन)। दैहिक परम्परा के निर्वहन में 121 वर्षीय देवस्वरुप श्रद्धेय दादा चौधरी प्रतापसिंह रघुवंशी सिमरिया दियाखेड़ा ने जीवन पर्यन्त निरोगी काया को सनातन विधान के अनुरुप परम पद प्रदान करने वाली काशी नगरी के मनिकर्णिका घाट पर इच्छामृत्यु का वरण करते हुए अपने शरीर को पंचतत्व में विलीन कर लिया। आपकी अंतिम इच्छा को आपके प्रपौत्र चौधरी भूपेंद्र सिंह ने पूरा किया और 29 अक्टूबर 2017 को बनारस के लिए रवाना हुए और वहां 36 घंटे बाद अपनी देह को त्याग कर शिव तत्व में विलीन हो गए तथा उन्होंने इच्छामृत्यु का वरण किया। नर्मदा अंचल के बुजुर्ग चौधरी प्रताप सिंह जी आत्मज मंशाराम जी ग्राम सिमरिया दियाखेड़ा के निवासी थे और तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। सन 1897 में जन्मे चौधरी जी की जीवनचर्या संयमित रही। उनकी पसंद आवरिया बेसन, मकई के भुजिया, मूंग खिचड़ी, मुनगा की कढ़ी और बिर्रा की रोटी थी। चाय या दूध दिन में एक-दो बार आप यदाकदा ही लेते थे। सुबह-शाम खेत पर जाना उनकी जीवनचर्या का महत्वपूर्ण अंग था। प्रताप सिंह जी के धूम्रपान छोड़ने का भी एक बड़ा रोचक किस्सा है। एक बार वे बस से भोपाल जा रहे थे और उन्होंने अपने साथी से बीड़ी पीने के लिए माचिस मांगी तब उसने इतना कह दिया कि बीड़ी पीते हो तो माचिस भी रखा करो। उस दिन का दिन था उनका वह बंडल वर्षो तक उनकी अलमारी में पड़ा रहा लेकिन उन्होंने फिर कभी बीड़ी नहीं पी। लगभग 20 साल पूर्व उन्होंने सुपाड़ी खाना भी छोड़ दिया था। आपके दो छोटे भाई स्व. अजबसिंह एवं स्व. श्यामसिंह का उनसे पहले ही स्वर्गवास हो गया था। आपके तीन बहनें थीं। नौ भतीजों-बेटों के अलावा तीन-चार पीढ़ियों की शादियां वे देख चुके हैं। आपका कुल मिलाकर 70 लोगों का परिवार है। वे स्वयं निसंतान थे लेकिन अपने अनुज चौधरी स्व. अजबसिंह के बच्चों को ही उन्होंने अपना माना और उनके साथ जीवन पर्यन्त रहे। उनके संयुक्त परिवार में चार पीढ़ियां एक साथ रह रही थीं। पिछले दस साल से चौधरी बाबूलाल रघुवंशी उन्हें ग्राम सिमरिया से बरेली ले आये और घर पर ही उनकी सेवा की। उन्हें कभी भी किसी असाध्य बीमारी ने नहीं जकड़ा कभी-कभार दो-चार साल में एक बार बुखार आ जाता था। पिछले दो साल से वे काफी कमजोर हो गए थे और उन्हें दैनंदिनी क्रियाकर्म के लिए सहारे की जरुरत पड़ती थी।

चौधरी प्रताप सिंह की देखभाल और सेवा में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी गई, गांव व शहर के लोग बाबूलालजी की काफी तारीफ करते हुए कहते हैं कि इतनी देखभाल तो खुद के बच्चे नहीं करते जितनी चौधरी बाबूलाल करते रहे। दीपावली के दो दिन पूर्व उन्होंने घोषणा कर दी कि -हम चले, हमने बहुत सेवा कराई अब हमें नीचे लिटा दो। चौधरी बाबूलाल जी ने कहा कि दादाजी अभी कहां अभी तो दीवाली आ गई, कुछ घंटे लेटे रहे फिर उन्होंने कहा कि कुर्सी पर बिठाओ और दाढ़ी बनवाओ और दीवाली के बाद ग्यारस से पहले काशी ले चलो, इतना कहने के बाद 12 दिन अपनी इच्छा से रुके रहे। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उन्हें काशी ले जाने का निर्णय लिया गया था।

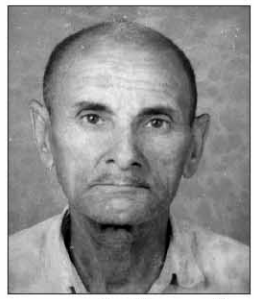

60 वर्ष की उम्र में

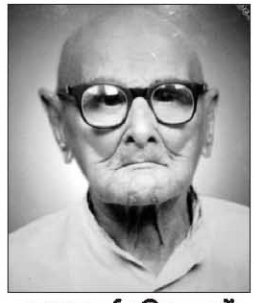

121 वर्ष की उम्र में

चौधरी भूपेंद्र सिंह के दादा चौधरी प्रताप सिंह के कैलाशवासी होने पर सर्वश्री सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग, विधायक रामकिशन पटेल, पूर्व विधायक भगवान सिंह, देवेंद्र पटेल गडरवास, विट्ठल भूतड़ा, शिवाजी पटेल, विनोद साहू, निरंजन शर्मा आदि ने उनके निवास पर पहुंच कर शोक संवेदना व्यक्त की। आपके निधन पर अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी, कार्यकारी अध्यक्ष पी.एस. रघुवंशी, उपाध्यक्ष द्वय चौधरी चंद्रभान सिंह एवं श्यामसुंदर रघुवंशी, महामंत्री उमाशंकर रघुवंशी, सचिव द्वय प्रहलाद सिंह रघुवंशी एवं विजय सिंह वर्मा, प्रचार सचिव एवं रघुकलश के संपादक अरुण पटेल, पूर्व मंत्री ठा. जसवंत सिंह, हरिशंकर रघुवंशी, ठा. गोविंद नारायण सिंह, प्रताप सिंह रघुवंशी, एडवोकेट द्वय चतुरनारायण रघुवंशी एवं भक्तराज सिंह रघुवंशी, चंदू रघुवंशी, भारतीय जनता युवा मोर्चे के जिलाध्यक्ष पवन रघुवंशी, नारायण पटेल, घनश्याम पटेल, हरपाल सिंह, राजेंद्र सिंह, महेश पटेली भुँआर, रामेंद्र पटेल, मास्टर शेरसिंह, हाकम सिंह, राघवेंद्र सिंह, यशपाल सिंह एवं जगदीश रघुवंशी आदि ने आपके निधन विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

# मानस संगोष्ठियों में बढ़ता युवाओं का रुझान

अशोकनगर(ओमवीर सिंह रघुवंशी)। जिले के ग्राम गजनाई में आयोजित मानस संगोष्ठी में सैकड़ों वरिष्ठ मानस प्रेमियों के बीच उपस्थित होकर किशोर-किशोरियों ने मानस की चौपाइयों का सस्वर वाचन किया। इसके साथ ही इन चौपाइयों के निहितार्थ भी समझाए। समुद्र लंघन के क्रम में बालिपुत्र अंगद के द्वारा अपने सामर्थ्य का बखान करते हुए ''अंगद कहइ जाउं मैं पारा, जिम संशय कछु फिरती बारा'' का गूढ़ार्थ संगोष्ठी में बड़ा ही आनंददायक रहा। उक्त चौपाई के अर्थ में चिंतन आया कि सीताजी की खोज हेतु जा रहे वानर दल में से श्रीहनुमान जी को बुलाकर श्रीराम जी ने एक मुद्रिका सौंपी। यह सब अंगदजी देख रहे थे, जबकि उस दल के नेता यानी सेना नायक अंगदजी थे। अंगद जी चौपाई में कह रहे हैं कि पार तो जा सकता हूं पर लौटने में कुछ संशय है। इस पर कहीं वर्णन सुनने को मिला कि बालपन में गुरु आश्रम में अंगद व अक्षय कुमार के बीच मारपीट होती रहती थी, अंगद अक्षय कुमार को पीटते और सताते रहते थे, अतः एक बार गुरुजी ने कह दिया था कि अब कभी भी अंगद तुम्हें सताये तो तुम एक घूंसा मारोगे तो अंगद धराशायी हो जायेगा। अतः अंगद को लंका में एक तो अक्षय कुमार का भय था और दूसरे मंदोदरी से मौसी का रिश्ता था इसलिए वे कहीं रोक न लें। एक तो अंगद युवराज हैं और दूसरे लंका में अद्वितीय सुंदर कन्यायें ''नर, नाग, सुर गंधर्व कन्या रुप मुनि मन मोहहीं'' अतः युवराज होते हुए राजसी गुण की प्रधानता कहीं उन सुंदरियों पर मोहित न कर दे, ऐसी कुछ शकाओं की ओर अंगद जी ने संकेत किया है, अन्यथा जो उस पार जाने की छलांग लगा सकता है वह

वापसी की छलांग भी लगा सकता था साथ ही बल बुद्धि की कोई कमी भी अंगद जी में नहीं थी। आगे चल कर हम देखते हैं कि लंका दहन के पूर्व हनुमान जी ने उस अक्षय कुमार को ही मारा और अंगद जी के मन का संशय दूर कर दिया था। ऐसे ही आनंद व प्रेरणादायक प्रसंग पर दिन भर मानस संगोष्ठी का आयोजन महीने में एक बार होता आ रहा है। रघुवंशी बहुल ग्राम मूदरा रतनसी में संगोष्ठी के आयोजक रहे श्री गोविंद सिंह एवं उनके अनुज बुंदेल सिंह ने उपस्थित मानस प्रेमियों को भोजन प्रसादी ग्रहण कराकर विशेष उत्साह का परिचय दिया। अगले क्रम में ग्राम फरदायी, टोरिया, बेरखेड़ी, गजनाई व कडेसरा में संगोष्ठी के भव्य आयोजन हुए। उक्त ग्रामों में सर्वश्री राजेश सिंह, बृजेश सिंह, रामवीर सिंह, दशरथ सिंह, शंभूसिंह, आदि ने आयोजन कराये।

# राजाराम सिंह रघुवंशी का देहावसान

अमरावती। हरताला जिला अमरावती के असाधारण व्यक्तित्व के धनी राजाराम सिंह लक्ष्मण सिंह रघुवंशी का विगत दिनों 97 साल की आयु में देहावसान हो गया। सामाजिक गतिविधियों में राजाराम सिंह का योगदान बेमिशाल था और वे 25 साल तक हरताला तहसील भातकुली में सरपंच के पद पर आसीन रहे और इस दौरान उन्होंने अनेक समाजिक कार्य संपादित किए। पंचायत भवन का निर्माण तथा लोगों की सुविधा के लिए कराये गये निर्माण कार्यो का ही यह परिणाम था कि वे सरपंच का चुनाव निर्विरोध रुप से जीतते रहे। स्वर्गीय रघुवंशी श्री. नाथनंगे महाराज संस्थान डब्बा देउलगांव जिला वाशिम में 1962 से कार्यरत थे और कार्यकारी सदस्य के रुप में यहां भी आपका

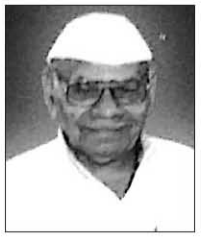

निर्विरोध निर्वाचन हुआ था। आपने इस तीर्थस्थान पर अनेक धार्मिक और बेमिशाल कार्य किए। उन्होंने मंदिर में श्री शंकरजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा कराई तथा धर्मशला और यज्ञ मंडप का निर्माण भी स्वयं के आर्थिक सहयोग से किया। आप शान्त स्वभाव के शांतिप्रिय और बेमिशाल व्यक्तित्व के धनी थे। उनके निधन पर रघुकलश के खानदेश ब्यूरो प्रमुख श्री दिलीप सिंह रघुवंशी तथा सर्वश्री निरंजन सिंह, रमेश सिंह, बली सिंह, बहादुर सिंह तथा सौ. उषाबाई और सौ. लताबाई ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

# बालिका शिक्षा को बढ़ावा देगा रघुवंशी महिला मंडल

गुना। रघुवंशी महिला मंडल की सामान्य सभा की बैठक में आगामी कार्यक्रमों की रुपरेखा तय करते हुए यह निश्चित किया गया कि रघुवंशी महिला मंडल बालिका शिक्षा को बढ़ावा देगा। जिला अध्यक्ष अनुसुइया रघुवंशी ने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत विगत पांच नवम्बर को ग्रामीण आवासीय बस्ती में पहुंचकर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में बच्चियों के माता-पिता व अभिभावकों को बालिका शिक्षा के लाभों के बारे में बताया गया। उन्होंने बताया कि इसके अलावा आगामी समय में महिलाओं के लिए स्वास्थ्य शिविर, नेत्र परीक्षण शिविर व फिजियोथेरेपी शिविर आयोजित किए जायेंगे। सहरिया बालिका छात्रावास में सभी छात्राओं के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. कपिल रघुवंशी एवं डॉ. अरुणा रघुवंशी ने अपनी सेवायें दीं। डाक्टर दंपत्ति ने लगभग चार घंटे तक सभी 70 बालिकाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया। जिन बालिकाओं में खून की कमी पाई गई उन्हें दवाओं के साथ उचित भोजन की सलाह भी दी गयी एवं सभी बालिकाओं को निशुल्क दवाओं का वितरण किया गया। इस अवसर पर उपस्थितों में मिथिलेश सेंगर, अनुसुइया रघुवंशी, राकेश रघुवंशी, आनंद कृष्णानी, शशिकांत दीक्षित व संजय खरे ने उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग किया। उपाध्यक्ष अर्चना रघुवंशी ने इस तरह के आयोजनों के उद्देश्यों पर

विस्तार से प्रकाश डाला। कोषाध्यक्ष संगीता रघुवंशी ने विभिन्न खेल कराये। माधुरी रघुवंशी, तृप्ति रघुवंशी, राखी रघुवंशी तथा प्रीति रघुवंशी ने भी अपने विचार प्रकट किए। समाज की महिलाओं द्वारा मगराना बीसभुजी मंदिर के पीछे आदिवासी बस्ती में बालिकाओं को पौष्टिक भोजन के पैकेट, कपड़े, फल, बिसकिट आदि वितरित किए गए तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं के स्टिकर भी लगाये गये। इस अवसर पर संगीता रघुवंशी, तृप्ति, माधुरी, राखी, अंजली, अनीता, शोभा, विजेरानी, ममता, लीला, भूरिया, सुषमा, स्नेहलता आदि रघुवंशी समाज की महिलायें उपस्थित थीं।

## अभिमत

# रघुवंशी समाज की ज्वलंत समस्या

रघुवंशी समाज में लिंगानुपात में बढ़ता अन्तर एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या ज्यादा बढ़ती जा रही है, इसका कारण यह है कि लड़की न होने देने की धुन लोगों पर सवार है और हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी पहली संतान लड़का हो जाए, लड़की की उसे आवश्यकता नहीं। इसी सोच के चलते समाज में लड़कों की संख्या बढ़ती जा रही है और शादी ब्याह में कई प्रकार की समस्याएं भी आ रही हैं। अब समय आ गया है जब इस बढ़ते असंतुलन को रोका जाए और इस असंतुलन को दूर करने के लिए अभियान छेड़ा जाए। यदि अभी भी इस स्थिति को नहीं रोका गया तो आने वाले समय में अंतरजातीय विवाह करने के लिए समाज के लोगों को मजबूर होना पड़ेगा। रघुवंशी समाज में विवाह सम्मेलनों के माध्यम से आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों को शादी-ब्याह करने की सुविधा मिली हुई है लेकिन इसके प्रति लोगों में रुचि नहीं बढ़ पा रही है। विवाह सम्मेलनों में लोगों की रुचि बढ़े इसके लिए भी प्रयास किए जाना चाहिए। युवा लड़कों को यदि नौकरी नहीं मिलती हो तो अच्छा व्यापार करने के प्रति उन्हें जागरुक करने की जरुरत है। समाज की बैठकों में यह बात रखना चाहिए कि किस तरह बढ़ती अविवाहित लड़कों की शादी की समस्या को हल करना चाहिए। 'रघुकलश' पत्रिका में अविवाहित युवक-युवतियों की डायरेक्ट्री प्रकाशन हेतु भी सामाजिक व्यक्तियों को पहल करने की आवश्यकता है। जिस प्रकार माहेश्वरी समाज की अखिल भारतीय विवाह डायरेक्टरी प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है उसी प्रकार हमारे समाज की भी अलग से एक पुस्तक प्रकाशित हो जिसमें अविवाहित वर-वधु का सम्पूर्ण बायोडाटा प्रकाशित किया जाना चाहिए। विधवा विवाह की ओर भी समाज को ध्यान देना चाहिए।

-सुरेंद्र सिंह रघुवंशी, एडवोकेट,
पचामा उदयपुरा रायसेन, मो.9993044340

# श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ आयोजन

श्री श्यामसुंदर रघुवंशी ने ब्रह्मलीन धर्मपत्नी श्रीमती गीता रघुवंशी की प्रथम वार्षिक पुण्य स्मृति में गीता जयंती पर दिनांक 22 नवम्बर से 29 नवम्बर 2017 तक श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का आयोजन रघुकुल भवन जवाहर चौक में किया। कथा वाचक पंडित श्री बाल व्यासजी महाराज वृन्दावन धाम के श्रीमुख से मुखरित होकर भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा सामाजिक पर्यावरणीय एवं आध्यात्मिक पहलुओं से गोपालन, गोवर्धन, यमुना जल की पवित्रता, लता वृक्षों का महत्व, इन्द्र एवं ब्रह्मा के अभिमान का विनाश एवं कृष्ण चरित्र, रुकमणि विवाह, सुदामा चरित्र आदि लीलाओं का संगीतमय मूर्त चित्रण कराया गया। कर्णप्रिय गोपी गीत पर भक्त आध्यात्मिकता में डूब गये।

कथा में अखिल भारतीय रघुवंशी समाज के सदस्यों अध्यक्ष श्री हजारीलाल जी रघुवंशी, माननीय मंत्री श्री संजय पाठक, माननीय विधायक श्री चन्द्रभान

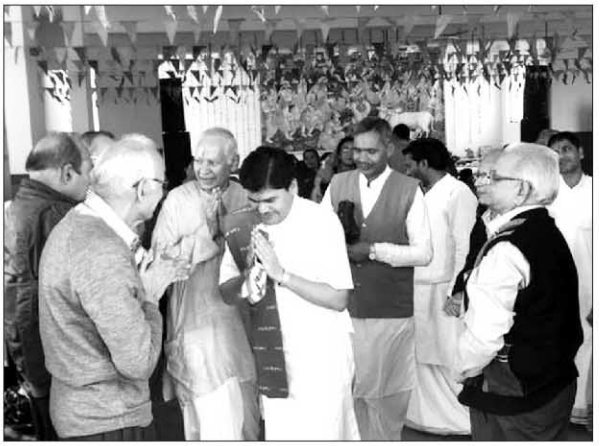

सिंह रघुवंशी,रघुकलश के संपादक अरुण पटेल, महासचिव श्री उमाशंकर रघुवंशी एवं श्री उत्तमसिंह रघुवंशी तथा श्री शिववरण सिंह रघुवंशी की उपस्थिति विशेष थी। इस अवसर पर श्री बाल व्यासजी महाराज के करकमलों से भोपाल निवासरत रघुवंशी समाज के 230 परिवारों की 'गीता दूरभाष दर्शिका' का भी विमोचन किया गया।

## विनम्रता सबसे अनोखा गुण

ईश्वर ने हम सबको बनाया है, परंतु उनकी रचना का ढंग दुनिया में सबसे अनोखा है। उन्होंने हम सबको इस दुनिया में किसी न किसी लक्ष्य के साथ भेजा है। कुछ लोगों में दूसरों की तुलना में गुण अधिक होते हैं। वहीं कुछ लोग स्वभाव से बहुत सरल एवं सहज होते हैं। जो चीजें किसी इंसान को महान बनाती हैं- वे उसकी नौकरी, धन या संपत्ति नहीं होती है। वास्तव में महान व्यक्ति वह होता है जिसमें विनम्रता, दया का भाव और उससे भी बड़ा गुण एक अच्छा दिल होता है। विनम्रता का सबसे बड़ा गुण अपने प्रभु श्रीराम से सीख सकते हैं। क्योंकि ईश्वर स्वयं बहुत विनम्र व दयालु है। इंसान में घमण्ड नहीं होना चाहिये, क्योंकि यही चीज उसे सबसे पहले गिराती है। इसीलिए दोस्तों हम सबको विनम्रता सीखनी चाहिये। दूसरों की मुश्किलों को समझनेका प्रयत्न करना चाहिये और सबसे ऊपर हमें एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिये।

-स्वाति पटेल,
शाहपुरा, भोपाल

## ओमवीर सिंह रघुवंशी को मिला प्रशस्ति-पत्र

आरोन । मध्यप्रदेश राज्य के 60वें स्थापना दिवस के अवसर पर 01 नवम्बर 2017 को भव्यतापूर्वक आयोजित मुख्य समारोह में ओमवीर सिंह रघुवंशी, सहायक शिक्षक को प्रशस्ति पत्र उनके विभागीय एवं सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान किया गया। हम इनके स्वस्थ व यशस्वी जीवन की कामना करते हैं। प्रशस्ति पत्र पर अरविन्द वाजपेयी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व परगना, आरोन जिला गुना तथा तीजा पंवार मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत, आरोन के हस्ताक्षर हैं।

# सच्चा गीत

उसी गीत से प्यार मुझे है।
उसी गीत की चाह मुझे है।
विद्यमान अत्युत्तम जिसमें,
लोकप्रिय गुण मुझे मिले हैं।
जो लोगों की पीर सुना दे।
हम सबकी तकदीर बना दे।
नींद भरे नैनों में भी जो,
आत्म-सुख की लहर दिखा दे।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।
मानवता जो जाग्रत कर दे।
सुप्त उरों में ताकत भर दे।
सभी जनों में प्यार बसाकर,
सच्चा प्रेम हमें सिखला दे।
पापी के जो हाथ बाँध दे।
दुष्कर्मी की टाँग तोड़ दे।
न्याय और समता की दुनिया,
अमृतमय जो सुख से कर दे।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।
जो अहम् को तुरन्त भुला दे।
स्वाभिमान की याद दिला दे।
और अनेकों खुशियों को भी,
परोपकार के लिये छुड़ा दे।
जो सब में ममता को भर दे।
दीन दुखियों को धन से भर दे।
हर प्राणी के चंचल मन में,
फिर से विश्व-बंधुत्व जगा दे।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।
जिसके स्वर में सुंदरता हो।
जिसकी लय में तत्परता हो।
साथ-साथ में इन सबके भी,
जिसका मतलब सर्वशांति हो।
जो लोगों के कान खोल दे।
मेरे जो अरमान बोल दे।
जीवन की क्षण-भंगुरता की,
कीमत सबके समक्ष तौल दे।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।
जो लोगों में प्रीति बढ़ा दे।
मुर्दादिल में जान डाल दे।
साहस और शौर्य से संचित,
हर मानस में फिर से बल दे।
रणभूमि में प्रत्येक वीर को,
भारत माँ की याद दिला दे।
दुश्मन जिसको सुनकर के ही,
उल्टे पैर तुरन्त भाग दे।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।
जो हवा में प्यार घोल दे।
हर मौसम सुख का ही कर दे।
नभ में नित नव-नूतनता हो,
ऐसी अलौकिक रचना कर दे।
और हमारे रगड़ों को जो,
नीर-क्षीर सा पल में कर दे।
जिससे आंसू भी मोती बन जायें।
करुणा की नदियां बह जायें।
सुनकर जिसको रोते चेहरे,
मुस्काते हमको दिख जायें।
मातृभूमि की जिसमें जय हो।
शत्रु को सुनते ही भय हो।
और राष्ट्र की शौकत की भी
सबसे मीठी जिसमें रब हो।
उसी गीत को साथी सच्चा गीत समझता हूं।

-इंजी. शम्भू सिंह रघुवंशी,
मो.9425762471

# विंडो /खिड़की

विंड़ो/खिड़की घर की शोभा है
खिड़की के बिना कमरा-कमरा नहीं
क्या कभी खिड़की से झाँक कर देखा है?
आते-जाते लोग, बच्चे-बड़े-बूढ़े
आती-जाती गाड़ियां, साइकिलें-ढेले
आवाज लगा देते कभी बच्चे को हम
आवाज लगा देते कभी सब्जी वाले को हम।।
करते अपनी कई जरूरतों को पूरा एक खिड़की से हम।।
आज की नई विंडो नहीं है हर घर में
ई-खिड़की लगाना है हमें
ई-खिड़की/विंड़ो बिना न रहे कमरा कहीं।
हर रोज झाँकना इस विंडो से हमें।
नई तकनीक, नई विधाओं से हमें।
आते-जाते पेरेंन्ट, टीचर्स, स्टूडेन्स को
आवाज लगाना नहीं अब हमें।
सिर्फ एक क्लिक करना हैं ऊंगली से हमें।
क्लिक-क्लिक कर हर क्षेत्र,
हर स्थान की जानकारी मिल जाएगी
एक स्थान पर बैठकर ही दुनियां हमें मिल जाएगी।
करना है हर दिन हमें।
ओपन शटडाऊन
हो चाहे कहीं भी, स्कूल या घर
ई-विंडो है बड़े.काम की
न डरो! इसे यह सोचकर मैं कैसे खोलूँ इसे?
खोलकर तो देखो बंद करना भूल जाओगे।
अपने प्रिंसिपल को टीचर्स को भी लगाना हैं
ई-विंडो से नजर
साथ ही विद्यार्थियों को भी ई-लरनर बनाना हैं।
सी.बी.एस.ई. ने खोल दिए है ई-टैक्नोलोजी के
द्वार विद्यार्थियों के लिए।
पर इस खिड़की को हम सबको अपने घर/ऑफिस लगाना है।
दुनिया मुठठी में माऊस के जरिए कर लेना है।
विंडो हमें लगाना हैं।

रचियता :
श्रीमती सुषमा रघुवंशी, प्राचार्य
कमला नेहरू हा.से. स्कूल (सी.बी.एस.ई.)
कमला नगर, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-03

# शिवचरण सिंह रघुवंशी की तीन कविताएं

## एक क्षणिक

तू किधर है यार
बातें बहुत
तेरी याद
वो चुलबुली
वे नटखटी
तेरी आदतें
पाकेट मे कुछ भी
डाल भाग जाना
भोलापन का तेरा
नाटक
याद आती हैं तेरी
शरारत भरी
बातें और हरकतें
समय के लम्बे
गहन रास्ते
घनघोर अंधेरे में
तूं कहाँ
खो गया यार
ये मन
ये निगाहें
ये आशाएँ
ये उम्मीदें
आज भी
कहीं
दिल की गहराइयों में
छुप के
चीख़ चीख़ कर
कह रही हैं
तू जरुर आयेगा
तू जरुर आयेगा

## सम्मान जननी का

मुझे ये ज़िन्दगी
तैरना सिखा दे
जीना सिखा दे
तहज़ीब सिखा दे
अदब सिखा दे
तेरी महफ़िल में
तेरी रजा में
तेरे अन्जुमन में
तेरे गुलशन में
रहना सिखा दे
इस ज़मीं से
इस महफ़िल से
इस ज़माने से
हीरा मोती चुनना
सिखा दे
इस धूल को
मिट्टी को
इंसानियत को
रोन्दना नहीं
गले लगाना
सिखा दे
मुझे तू ये
ज़िन्दगी
औरों को
अपना बनाना
सिखा दे
नफ़रत से
दुश्मनी से
बचा मुझे
ऐ पाक ज़िन्दगी
मुझे मोहब्बत
तहज़ीब
बहना
तैरना
सिखा दे
मुझे शिकायत
शिकवा
न रहे किसी से
ऐसा इन्सान
बना दे
तू ये ज़िन्दगी
मुझे जीना
सिखा दे
मेरी दो हथेली
जुड़े तो
झुकना सिखा दें
खुले तो
दुआ
और उठें तो
मज़हब
बना दें
तूं ये ज़िन्दगी
मुझे जीना
सिखा दे

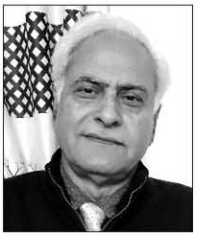

## बचपन की दोस्ती

आज अचानक बचपन का इक मित्र आया
अद्भुत परिवर्तन उसके चेहरे पर मैंने पाया
बाल खिजे हुए उम्र का तक़ाज़ा चेहरे पर थी
बातें बचपन की ज्यों त्यों उसकी ज़ुबा पे थी
क्रम शुरु उसने जब बातों में किया धीरे धीरे
हँसी मज़ाक़ यादें शुरु हुई यूँ ही धीरे धीरे
वक़्त हमें बचपन के याद आने लगे हौले हौले
वो क्रिकेट का मैदान वो बाउंड्री केंच की दौड़ें
उम्र कब हम से बाहर निकल गई चुपचाप
पता ही न लगा हम दोनों को उसकी पदचाप
हँसी के वे बेजोड लम्हे खिसकने लगे पास
बातें में हो गयी ठंडी नास्ता चाय का गिलास
उम्र ये देख सकुचा के दूर से देखती रही
क़िस्से कहानी की आँधी में शर्माती रही
दोस्तों के मिलन ने छीन ली मानो ताक़त
उम्र की यूँ कि करने लगी वह तक बगाबत
बचपन की ये ताक़त कितनी दमदार होती है
आयुर्वेद जड़ी बूटी से ज़्यादा असरदार होती है
दुनिया के किसी बाज़ार में ये मिलती नही है
क्योंकि इक उम्र इसे पाने में गुज़ारनी होती है

-50, पारस मैजिस्टिक, त्रिलंगा, भोपाल
मो.:08978500103,09441237470

# वात्सल्यमयी माँ अमर है

जगन्नाथसिंह रघुवंशी 'मैयर'

रघुकुल सुजनो, मानस में माताओं के वात्सल्य का निरुपण तुलसी बाबा ने गौ मॉ की उपमा से विभूषित किया है, क्योंकि गौ मॉ के अलावा माताओं के वात्सल्य की उपमा श्रेष्ठी में है ही नहीं। तब लिखा--

कौशल्यादि मातु सब धाई, निरखि वच्छ जनु धेनु लवाई।
जनु धनतु बालक बच्छ तजि ग्रह चरन बन परबस गई।
दिन अंत पुर रुख स्त्रवत थन हुँकार करि धावत भई।

तो यह वात्सल्य सिर्फ मॉ का ही होता है। अतः वो बहुत भाग्यशाली हैं, जिन पुत्रों के मॉ हैं, और जिनके मॉ नहीं हैं वो भी भाग्यशाली हैं, वो भी भाग्यशाली हैं अपनी जननी के वात्सल्य से जो हर समय साथ रहता है।

भक्तों ने माता के रुप में ईश्वर की भक्ति की है। क्योंकि ईश्वर का मुख्य कर्म सबका रक्षण, पोषण और अभयदान है तो यही सब संसार में माता करती है। ईश्वर के प्रेम का सच्चा रुप मॉ का मातृत्व ही है। ईश्वर अविनाशी है तो मॉ का मातृत्व भी अमर है। महाभारत कथा में यक्ष द्वारा युधिष्ठिर महाराज से पूछे प्रश्नों में एक प्रश्न था कि सबसे भारी क्या है। धर्मराज का उत्तर था- मॉ का मातृत्व सबसे भारी है।

मृत्यु तो सिर्फ देहावसान है। आत्मा तो हमर होती है इसलिए अपना मानना है वात्सल्यमयी मॉ अमर है। वह जहां भी होगी इसी चिन्ता में लगी होगी कि उसके बेटे को तकलीफ न हो। उसी इसी इच्छाशक्ति ने उसे जीवित रखा है। इसलिए अपना मानना है कि वह जिन्दा है!

मैं तुझमें तेरी ममता से कैद हूं मॉ और तुम अपने वात्सल्य से मुझमें जिन्दा हो मॉ। मेरी रगों में उनका ही खून बहता है और मेरी अंगुलियों में उनके ही स्पर्श का आभास श्वांस लेता है। उन्होंने खुद को खोकर मुझमें एक नया आकार लिया है। वह हमेशा हमारे साथ रहती है। जब भी मैं मोमबत्ती को पिघलते हुए रोशनी देते हुए देखता हूं, अम्मा याद आती है। खुद को खोकर हमें बड़ा करते हुए दिखती है। चोट किसी को लगे दर्द उसे होता ही होता है। संयुक्त परिवार के रिश्तों की बाकरीकियां सिर्फ वही समझती है। गलतियां किसी की हों, सारा गरल वह अपने गले में रखती है। परिवार में कैसे भी झगड़े हों वो दूसरों के गुनाहों को धो देती है और बहुत गुस्सा हो तो रो देती है। कवि आलोक की दो पंक्तियां--

घर में झीने रिश्ते मैंने लाखों बार उघड़ते देखे।
चुपके-चुपके कर देती थी जाने कब तुरपाई अम्मा।
उनके न रहने पर रिश्ते उधड़े, तार-तार हुये।
तभी लगा अम्मा अब नहीं हैं।

पौराणिक कथा है-- नारद ने ब्रह्माजी से पूछा पितामह इतनी गौर से आप क्या बना रहे हैं? ब्रह्माजी का जवाब था ''मॉ'' बना रहा हूं। नारद ने फिर पूछा माँ कैसे बनती है? ब्रह्माजी ने कहा- जिसकी कोख में इंसानियत जन्मती हो, जिसकी गोद में दुनियां समा जाये, जो बच्चे की आवाज से उसकी परेशानी जान जाये, जिसकी संतान परदेश में रोए, आँचल देश में भीगे। लाख तकलीफों के बावजूद जिसके दिल से दुआ निकले। जिसके मन मे जमाने भर का दर्द समा जाये और अधरों पर आह न आये। मॉ ऐसे बनती है, मॉ ऐसी होती है।

मान्यवर, मॉ अपने वात्सल्य लुटाने को अखंड ब्रह्मांड नायक को भी पुत्र रुप में ही चाहती है। जब भगवान सतरुपा से वरदान मांगने को कहते हैं तो वे कहती हैं कि--- चाहऊं तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ।

मॉ की अमरता को लेकर शायर रजा की रचना की कुछ पंक्तियां हैं-

गौ के आगोश में जब थक के सो जाती है मॉ।
तब कहीं जाकर थोड़ा सुकूं पाती है मॉ।
कब जरुरत हो मेरी बच्चे की, इतना सोचकर।
जागती रहती हैं आंखें और सो जाती है मॉ।
मांगती नहीं अपने लिए भगवान से कुछ भी।
अपने बच्चों के लिए दामन फैलाती है मॉ।
गर जबाँ बेटी हो घर में और कोई रिश्ता न हो,
इक नए अहसास की सूली पे चढ़ जाती है मॉ।
प्यार कहते हैं किसे और ममता क्या चीज है।
कोई उन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है मॉ।
जब परेशानी में घिर जाते हैं हम परदेश में,
आंसुओं को पोछनें सपनों में आ जाती है मॉ
लौटकर वापस सफर से जब घर आते हैं हम,
डालकर बाहें गले में सर को सहलाती है मॉ।
मरते दम बच्चा न आ पाये अगर परदेश से,
अपनी दोनों आंखें चौखट पर रख जाती है मॉ।
बाद मर जाने के फिर बेटे की खिदमत के लिए,
भेस बेटी का बदलकर घर में आ जाती है मॉ।

''जीवन में बिटिया एक जरुरी है वरना जीवन मजबूरी है।''

- ग्राम-हिनौतिया,जिला-गुना
मोबाइल-9993269165

# ज्योतिष्य कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल म.प्र.
मो. 9827331388

## जनवरी माह-2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 1 शाकंभरी पूर्णिमा, ता. 5 संकटा गणेश चौथ, ता. 12 षटतिला एकादशी, ता. 14 मकर संक्रांति, ता. 22 बसंत पंचमी, ता. 25 भीमाष्टमी।

मेष- स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। सार्वजनिक कार्यो पर धन खर्च होगा। पारिवारिकजनों से प्रसन्नता मिलेगी। नये कार्यो का विकास होगा। संघर्ष में सफलता प्राप्त होगी। मनोरंजन के अवसर बनेंगे। गाड़ी चलाने में सावधानी बरतें।

बृषभ- मनोवृत्ति में संवेदनशीलता से बचें। नये लक्ष्य पर केन्द्रित करने का लाभ मिलेगा। आय-व्यय सामान्य रहेगा। स्त्री वर्ग में हर्ष उल्लास रहेगा। आलस्य से बचें। वाहन क्रय की योजना बनेगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे।

मिथुन- बड़े लोगों से मेल-मिलाप होगा। मित्रों का सहयोग रहेगा। कहीं से शुभ समाचार प्राप्त होगा। कार्यो की अधिकता रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ होगी। किसी के प्रलोभन में नहीं फंसे अन्यथा हानि होगी।

कर्क- सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। रोजगार के अवसर बनेंगे। प्रेमपात्र से मनमुटाव रहेगा, तर्क-वितर्क से बचें। बाहरी यात्रा के योग बनेंगे। व्यापार-व्यवसाय में विस्तार की योजना बनेगी।

सिंह- दैनिक कार्यो में सुधार होगा। वाणी पर नियंत्रण रखकर कार्य करें। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। चिंताओं से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक कार्यो के प्रति रुझान बढ़ेगा। नये मित्र बनेंगे, स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्या- भाग्य के प्रति उदासीन न बनें, समय अनुकूल है। अनायास धन प्राप्ति के योग बनेंगे। कार्यो में अधिकरी वर्ग का सहयोग मिलेगा। नवयुवतियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के योग बनते हैं।

तुला- अधिकारों में वृद्धि होगी। राजनैतिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। भौतिक संसाधनों पर धन खर्च होगा। दाम्पत्य जीवन में थोड़ा तनाव रह सकता है। दूसरों से ईर्ष्या व मतभेद से बचे।

वृश्चिक- जमीन-जायदाद के कार्यो में कठिनाई होगी। पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा संभव है। अपनी योजनाओं को गुप्त रखें। संतान के कार्यों पर धन खर्च होगा। व्यापारी वर्ग को धन लाभ के योग बनेंगे।

धनु- मनोबल उत्साहवर्धक रहेगा। कठिन कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। विद्या के क्षेत्र में उन्नति के योग। उच्च शिक्षा का लाभ मिलेगा। शासकीय सेवकों को थोड़ी कार्यो में अड़चने रहेंगी। नियम से चलें।

मकर- शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा। आकस्मिक घटनायें घटेंगी। गर्भवती महिलाओं को पुत्ररत्न के योग बनेंगे। दूर-पास की यात्रा संभव है। उद्योगपति एवं इंजीनियरों के लिए लाभ के अवसर बनेंगे।

कुंभ- गंभीर समस्याओं का निराकरण होने से मन प्रसन्न रहेगा। व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति होगी। किसी वृद्ध व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। पुराने मित्र से मिलन होगा। न्यायिक प्रकरणों में विलम्ब रहेगा।

मीन- किसी के आश्वासन का लाभ मिलेगा। योजनायें फलीभूत होंगी। स्टेशनरी, फर्नीचर, परिधान के विक्रेताओं को लाभ मिलेगा। कर्मचारी महिला वर्ग को अधिकारियों की प्रताड़ना सहनी पड़ेगी, कृपया अपना आचरण संवारें।

## फरवरी माह-2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 8 सीता अष्टमी, ता. 11 विजया एकादशी, ता. 14 महाशिवरात्रि, ता. 17 फुलरिया दोज, ता. 19 विनायकी चतुर्थी व्रत, ता. 26 आमलकी एकादशी।

मेष- मानसिक तनाव से परेशानी होगी। संतान से कष्ट मिलेगा। विनम्रता से कार्य बनेंगे। व्यापार में संतोषजनक वृद्धि होगी। कार्य विशेष से बाहर जाने का विचार बनेगा। वैभव-विलासिता के साधनों पर धन खर्च होगा।

बृषभ- मांगलिक कार्यो के सम्पन्न होने से घर-परिवार में उत्साह रहेगा। नई रिश्तेदारी बनेगी। अनावश्यक कार्यो से बचें। कार्यो में अधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा। युवाओं को रोजगार के प्रयास सफल होंगे।

मिथुन- अहंकार से बचें। अपने किए गए कृत्य पर पछतावा होगा। बड़ों के आदर करने का लाभ मिलेगा। व्यवसाय-विस्तार हेतु धन खर्च करना पड़ेगा। जनसंपर्क से आय के साधन बनेंगे।

कर्क- अपने विचारों को संकुचित न रखें। ईर्ष्या-द्वेष से बचें। बाहरी यात्रा का लाभ मिलेगा। अल्प समय में कार्य बनेंगे। कोर्ट-कचहरी के कार्यो पर धन खर्च होगा। मकान निर्माण का कार्य बनेगा।

सिंह- सामाजिक व राजनैतिक कार्यो में प्रतिष्ठा पर आंच आने का भय रहेगा। विरोधियों से सतर्क रहें। विद्यार्थी वर्ग को शिक्षा का लाभ प्राप्त होगा। समय पर बिगड़े कार्य बनने से हर्ष होगा

कन्या- वृद्धजनों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। अतिथि आगमन के योग हैं। शासन सत्ता का कार्यों में सहयोग मिलेगा। प्रेम संबंधों को लेकर थोड़ी उलझनों का सामना करना पड़ेगा। खर्च की अधिकता रहेगी।

तुला- सकारात्मक विचार रखें, कार्य सफल होंगे, संदेह से बचें। अपनी वस्तु-विशेष का ध्यान रखें। गुमने अथवा चोरी जाने का भय रहेगा। धार्मिक यात्रा के योग बनेंगे। कुटुम्बीय जनों से मेल-मिलाप आनंद के अवसर बनेंगे।

वृश्चिक- प्रापर्टी खरीदने के लिए समय अनुकूल है। धन की आई-चलाई रहेगी। संतान की उपलब्धि पर प्रसन्नता होगी। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन के योग। कोई अच्छा समाचार प्राप्त होगा।

धनु- आर्थिक व्यवस्था थोड़ी डॉवाडोल रहेगी। अनावश्यक खर्चो से बचें। दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। किन्तु पिता-पुत्र में मतान्तर रहेगा। घर में किसी मंगल कार्य की योजना बनेगी। चोट लगने का भय रहेगा।

मकर- नौकरीपेशा वर्ग को थोड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी। बेवजह की अड़चनों से मन खिन्न रहेगा। शेयर या व्यापार में पूंजीनिवेश की योजना बनेगी। कार्यशक्ति व संघर्ष का लाभ मिलेगा ईश्वर पर आस्था रहेगी।

कुंभ- आमदनी अठन्नी खर्च रुपैया रहेगा, अतः फिजूलखर्ची व नशे की लत आदि से बचें। धीरे-धीरे हालात सामान्य होंगे। शासन-सत्ता के कार्य बनेंगे। विरोधियों पर आपका प्रभाव बढ़ेगा।

मीन- पत्नी की मदद से कार्य बनेंगे। विद्या अध्ययन में छात्र वर्ग को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कोई भी कार्य दूसरों को न सौंपें अन्यथा हानि होगी। आप सोचेंगे कुछ होगा और कुछ।

## मार्च माह- 2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 1 होलिका दहन, ता. 2 होली उत्सव, ता.3 भाईदोज, ता. 5 गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 6 रंगपंचमी, ता. 9 शीतलाष्टमी, ता. 13 पापमोचनी एकादशी, ता. 18 नवरात्रा प्रारंभ ता. 20 गणगौर तीज ता. 25 महाअष्टमी एवं रामनवमी पर्व।

मेष- स्वयं के प्रयास व प्रयत्नों से आवश्यक कार्य बनेंगे। कोई मनोकामना पूर्ण होगी। सामाजिक कार्यों पर धन खर्च होगा। मकान आदि की मरम्मत करानी पड़ सकती है। स्वास्थ्य की चिंता रहेगी।

वृषभ- रोजगार के क्षेत्र में परिवर्तन के योग। नये आयाम बनेंगे। क्रोध एवं जल्दबाजी को टालें। महिला वर्ग में उत्साह रहेगा। धार्मिक आयोजनों में सफलता प्राप्त होगी। अनायास धन मिलेगा।

मिथुन- स्वार्थी तत्वों से सावधान रहें। ठगी के शिकार बन सकते हैं। किसी नये प्रोजेक्ट पर काम करने से उत्साह बढ़ेगा। नौकरीपेशा वर्ग को तरक्की में रुकावट पैदा होगी। घरेलू कार्यों में धन खर्च होगा।

कर्क- प्रेम प्रसंगों में सफलता प्राप्त होगी। विवाह योग कन्याओं के रिश्ते मिलेंगे। गृहस्थ जीवन का सुख मिलेगा। रोजगार हेतु बाहर जाना पड़ेगा। खिलाड़ी वर्ग को नये अवसर उन्नति देंगे।

सिंह- भागीदारी से व्यापार में लाभ की योजना बनेंगी। यात्रा या प्रवास में धन का प्रयोग ठीक से करें अन्यथा हानि होगी। कामकाज के प्रति रुचि जाग्रत होगी। अनसोचे कार्य बनेंगे।

कन्या- रुके कार्य बनाने हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। सफलता मिलेगी। भाई-बंधुओं की सहायता में धन खर्च होगा। बीमा या फिक्स डिपाजिट से धन प्राप्त होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

तुला- युवा वर्ग में प्रतियोगिता परीक्षा इत्यादि में संलग्न हुए तो परिणाम अनुकूल रहेंगे। राजनीति व संगठनों के कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रेम प्रसंगों में प्रगाढ़ता रहेगी धैर्य से काम लें।

वृश्चिक- बहुउद्देशीय कार्यों के प्रति रुझान रहेगा। चल-अचल सम्पत्ति का क्रय-विक्रय संभव है। अत्यधिक विश्वास से बचें। छुटपुट चोट आदि का भय रहेगा। व्यापार व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी।

धनु- नैतिक जिम्मेदारियां बढ़ेगीं। अतिथि सत्कार पर धन खर्च होगा। समय पर उधार-ऋण चुकाने से मन में संतोष रहेगा। कार्यस्थल में परिवर्तन या पदोन्नति के योग।

मकर- बौद्धिक व्यवहार का लाभ मिलेगा। आय के नवीन साधन बनेंगे। मित्रों का कार्यों में सहयोग मिलेगा। जमीन जायदाद के कार्यों पर धन खर्च होगा। प्रेमी प्रेमिका का मिलन होगा।

कुंभ- दूरदर्शिता से कार्य करें। सामाजिक सामंजस्य बिठायें। कार्य में सफलता के योग बनेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में ज्यादा परिश्रम करना पड़ेगा। छात्र-छात्राओं को भविष्य की चिंता रहेगी।

मीन- रचनात्मक कार्यों का विस्तार होगा। साहित्यिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। प्रतिभा का लाभ मिलेगा। आय-व्यय सामान्य रहेगा। घर में नया सदस्य जन्म लेगा। खुशी होगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट, 25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित कर ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, से प्रकाशित। **संपादक- अरुण पटेल**

फोन न.0755-2552432, मो. 9425010804, ईमेलः raghukalash@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। RNI No. MPHIN/2002/07269

## विवाह योग्य युवक-युवती

Name: **Neha Raghuwanshi**, D.O.B:19-2-1992, Height:5'4", Qualification: Masters of pharmacy (Mumbai university), Bachelor of pharmacy ( Mumbai university), Job: currently working in multinational company, Father's name: Omprakash Raghuwanshi, Mother's name: Urmila Raghuwanshi, Gotra:Mathneria, Contact No. : 08237902851, 09420055893, 9561828575

Name : **Priyanka Raghuwanshi**, Place: Bhopal, DOB:27/09/1989, Occupation: assistance professor in private engg college., Qualification: BE ,M.tech, Father's name :Mr. R .C Raghuwanshi, Occupation: govt officer in irrigation dept.(retired)., Mother's name : Maya Raghuwanshi, Occupation: Housewife, Bother: Pankaj Raghuwanshi , Married, Banking Profession(SBI) Sister : Manisha Raghuwanshi , Married, Native place : Seoni Malwa. Contact No. : 9977915268

## बधाई... शुभकामनाएं... आभार...

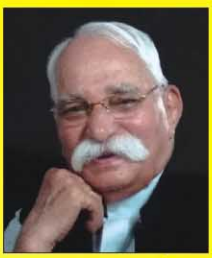

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष

पी.एस. रघु
राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष

उमाशंकर रघुवंशी
राष्ट्रीय महासचिव

अजय सिंह रघुवंशी
प्रदेश अध्यक्ष

ठा. जसवंत सिंह
पूर्व मंत्री, मप्र शासन

बालमुकुंद सिंह रघुवंशी 'बाबूजी'
जिला अध्यक्ष, रायसेन

**अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा**
**के रायसेन जिला अध्यक्ष पद पर**

## श्री बालमुकुंद रघुवंशी (बाबूजी)

**की नियुक्ति पर**

## बधाई एवं शुभकामनाएं

**तथा राष्ट्रीय पदाधिकारियों के प्रति आभार**

नारायण सिंह रघुवंशी
ब्लॉक अध्यक्ष, बरेली

महेश पटेल मुआर
ब्लॉक अध्यक्ष, सिलवानी

कृपाल सिंह
ब्लॉक अध्यक्ष, उदयपुरा

**सौजन्य : अखिल भारतीय रघुवंशी(क्षत्रिय) महासभा, जिला रायसेन**

# मध्यप्रदेश
को
## हॉल ऑफ फेम का राष्ट्रीय अवार्ड
तीन साल से लगातार
## बेस्ट टूरिज्म स्टेट


श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

**मध्यप्रदेश पर्यटन को 10 नेशनल अवार्ड से नवाजा गया**

- हॉल ऑफ फेम अवार्ड बेस्ट स्टेट।
- जल–महोत्सव हनुवंतिया को मोस्ट इनोवेटिव टूरिस्ट प्रोडक्ट।
- बेस्ट स्टेट फॉर एडवेंचर टूरिज्म।
- **चंदेरी :** बेस्ट हेरिटेज सिटी।
- **खरगौन :** सिविक मैनेजमेंट ऑफ टूरिस्ट डेस्टिनेशन ऑफ इण्डिया।

**पिछले साल 5 राष्ट्रीय अवार्ड**


राष्ट्रपति श्री रमनाथ कोविंद ने नई दिल्ली में मध्यप्रदेश पर्यटन को 10 राष्ट्रीय अवार्ड से नवाजा।
प्रदेश की ओर से पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री सुरेन्द्र पटवा,
पर्यटन निगम के अध्यक्ष श्री तपन भौमिक ने यह अवार्ड प्राप्त किये।

Heritage | Wildlife | Pilgrimage | Leisure

**Tourist Helpline No. 18002337777**

https://www.mptourism.com
https://www.facebook.com/MPTourism
https://twitter.com/MPTourism
https://www.youtube.com/user/mptourism
https://in.pinterest.com/MpTourismDotCom
https://www.instagram.com/mptourism/

- **उज्जैन :** टूरिस्ट फ्रेंडली रेलवे स्टेशन।
- इंग्लिश कॉफी टेबल बुक को एक्सिलेंस इन पब्लिशिंग का नेशनल अवार्ड।
- बेस्ट फिल्म प्रमोशन फ्रेंडली स्टेट का नेशनल अवार्ड।
- बेस्ट वाइल्ड लाइफ गाइड का नेशनल अवार्ड, श्री सईब खान, पचमढ़ी।
- सिंहस्थ, 2016 के हिन्दी ब्रोशर को एक्सिलेंस इन पब्लिशिंग का नेशनल अवार्ड।

**इसके पूर्व 6 राष्ट्रीय अवार्ड**

D-82390/17

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2017

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी